www.thearyasamaj.org

ओ३म्

ऋषिमना यः ऋषिकृत् स्वर्षाः (साम. ११७९)

हम ऋषिमना होकर प्रभु की प्रभा को प्राप्त करें।

श्री जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का मुखपत्र

महर्षि पाणिनि-प्रभा

www.thearyasamaj.org

3 मार्च, कार्यक्रम के आरम्भ में ध्वजोत्तोलन करते हुए पूज्य स्वामी धर्मानन्दजी (गुरुकुल आमसेना, उड़ीसा)

महर्षि पाणिनि मंदिरम् का उद्घाटन करते हुए पद्मभूषण डॉ. बिन्देश्वर पाठक (सुलभ इंटरनेशनल, नई दिल्ली)

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. बिन्देश्वर पाठक का शस्त्राभिवादन से स्वागत करतीं ब्रह्मचारिणियाँ

उद्घाटन समारोह के कुछ अविस्मरणीय पल

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

महीयसी संस्थापिका
डॉ० प्रज्ञा देवी जी

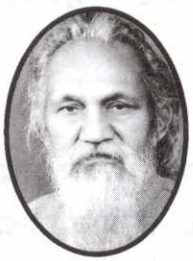

पूज्य गुरुवर्य
श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी

महीयसी संस्थापिका
अनुजा-आचार्या मेधा देवी

महर्षि पाणिनि-प्रभा

सृष्टि संवत् १,९७,२९,४९,११४	संयुक्तांक जनवरी–मार्च, २०१३	वर्ष ७, अंक–१	मार्गशीर्ष–चैत्र, वि.सं. २०७०

सम्पादिका
आचार्या नन्दिता शास्त्री चतुर्वेदी
मो० - 9235539740

◆

सहसंपादिका
डा० प्रीति विमर्शिनी
मो० - 9235604340

◆

प्रकाशक
पाणिनि कन्या महाविद्यालय
पो० - महमूरगंज, तुलसीपुर,
वाराणसी- 221010 (उ0प्र0)
फोन : (0542) 6544340

◆

पत्रिका सदस्य
वार्षिक : 150/-
आजीवन : 1500/- (दस वर्ष)

प्रभा–रश्मयः

1. **वेद-वाणी–** मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत– – आचार्या नन्दिता शास्त्री 2–5
2. **सम्पादकीयम् –** वैदिक तप- त्याग के ... – आचार्या नन्दिता शास्त्री 6–10
3. नव सम्वत्सर हेतु शुभकामना (कविता)– – अखिलानन्द पाण्डेय 'अखिल' –11
3. **त्रिदिवसीय महोत्सव का वृत्तान्त–** – डा. प्रीति विमर्शिनी 12–23
4. **भाग्य और पुरुषार्थ–** – आचार्य हरिहर पाण्डेय 24–25
5. कन्या गुरुकुल की माटी जो बनाती इस्पात –– प्रमोद यादव 26–27
6. ज्ञान प्रसार का केन्द्र बनेगा पाणिनि मंदिरम् –– वरिष्ठ संवादाता –28
7. **स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका –** आशा रानी व्होरा 29–32
8. **भोजन के द्वारा चिकित्सा –** – डॉ. गणेश नारायण चौहान 33–36

◆

www.paninikm.com, e-mail- paninikm@gmail.com।

www.thearyasamaj.org

वेद-वाणी

मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत–

मित्रो जनान्यातयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम्।
मित्रः कृष्टीरनिमिषाभिचष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत।।

(ऋ. 31/59/1)

इस सूक्त का देवता है मित्र। इस सूक्त में मित्र शब्द से वायु अभिप्रेत है। यह वायु प्राणी मात्र का मित्र है। **महर्षि यास्क** मित्र शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए लिखते है– **मित्रः प्रमीतेस्त्रायते, सम्मिन्वानो द्रवतीति वा** निरू. 10/2/13 यह हमारी मृत्यु से रक्षा करता है। तथा सबको भली प्रकार सींचता हुआ जीवनदान देता हुआ गति करता है (मिवि सेचने + द्रु गतौ + ड = मित्र) **मेदयतेर्वा** अथवा यह सबसे स्नेह करता है या फिर सब इससे स्नेह करते हैं।

मन्त्र का अर्थ है– यह मित्र वायु **ब्रुवाणः** = (बिना कहे) शब्द करता हुआ **जनान् यातयति** लोगों को कर्म में प्रवृत्त करता है। यही **दाधार पृथिवीम् उत द्याम्** द्युलोक तथा पृथिवी लोक को भी यथास्थान आकर्षण शक्ति के द्वारा धारण किये हुए है। सामान्यरूप से वायु का स्थान अन्तरिक्ष माना गया है पुनरपि वेद में वायु के लिये त्रित शब्द का भी प्रयोग प्राप्त है **त्रिषु स्थानेषु ततः त्रितः** अर्थात् जो तीनों लोकों में विस्तार को प्राप्त है उसका नाम त्रित है।[1]

यही मित्र **कृष्टीः** मनुष्यों को **अनिमिषा अभिचष्टे** बिना पलक झपकाये देख रहा है। **कृष्टयः** मनुष्याः निघ. 2/3। वैदिक शब्द कोश में कृष्टि शब्द मनुष्य नामों में पढ़ा है। क्योंकि वे कृषिकर्म वाले होते हैं। मित्र वायु का मनुष्यों को देखने से तात्पर्य है उन पर कृपा दृष्टि बरसाना। देखा जाये तो उसकी कृपा तो सर्वदा सबके ऊपर बरस ही रही है पर उस कृपा का अधिक से अधिक लाभ कौन उठा पाते हैं यह महत्त्वपूर्ण है। मन्त्र में मनुष्य के लिये प्रयुक्त कृष्टयः शब्द से यह स्पष्ट होता है कि जो कर्मशील हैं पुरुषार्थी हैं वे ही उससे पूर्ण लाभ ले सकते हैं। यहाँ तक कि जो कुछ नहीं कर सकते जिनके पास कोई रोजगार नहीं है वे भी यदि कुछ नहीं तो कृषिकर्म ही करें भगवान् की कृपा, भगवान् के सेवकों की कृपा उन पर बरसेगी। ये पृथ्वी, जल, वायु, सूर्य, चन्द्र, वृक्षादि देव जो कि परमेश्वर की आज्ञा में परमेश्वर के व्रत में सतत क्रियाशील रहते हैं। अतः उस परमेश्वर

1. ऋ. 1/163/2

www.thearyasamaj.org

के सेवक कहे जाते हैं। वेद कहता है–

यस्य व्रते पशवो यन्ति सर्वे
यस्य व्रते उपतिष्ठन्त आपः।
यस्य व्रते पुष्ट पतिर्निविष्टस्तं
सरस्वन्तमवसे हवामहे।।

(अथर्व. 7/41/1)

जिसके व्रत में अन्न जल ओषधादि जड़ पदार्थ ही नहीं पशु-पक्षी भी जिसके व्रत का पालन करते हैं संसार का उपकार करते हैं। यही नहीं ब्रह्मचर्य सूक्त में इन्हें व्रती ब्रह्मचारी भी कहा है।[1] क्योंकि ये परमेश्वर की आज्ञा के अनुकूल ऋतुगामी होते हैं।

ऋग्वेद में एक सूक्त है जिसमें जुए की निन्दा तथा जुआरी की दुर्दशा का वर्णन है कि किस प्रकार उसकी माँ, बहिन, पत्नी तक उससे दूर भागते हैं। फिर पत्नी की क्या दशा होती है, किस प्रकार वह जुआरी ऋणवान् होकर दूसरों के घर पर चोरी तक करने पहुँच जाता है और दूसरों की माँ बहिन को सुखी देखकर विलाप करता है आदि आदि। उन निराशा के क्षणों में भी जिस समय वह सब कुछ गँवा चुका है वेद कहता है–

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व
वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।
तत्र गावः कितव तत्र जाया
तन्मे विचष्टे सवितायमर्यः।।

(ऋ. 10/34/13)

ऐ मनुष्य! तू उठ! तू आज से ही व्रत ले मैं जुआ नहीं खेलूँगा। तेरे पास कुछ नहीं है, कुछ नहीं कर सकता, तो मेरी सलाह मान! **कृषिमित् कृषस्व** तू खेती ही कर! तू कभी भूखा नहीं मरेगा। साथ ही व्यस्त रहेगा तो दुर्व्यसनों से भी बचा रहेगा और सुन! उस खेती से प्राप्त धन-धान्य को ही बहुत मानता हुआ उसी में रमण कर। उस कृषिकर्म में ही तुझे फिर से गाय, बैल, तेरी पत्नी आदि सब तेरे अपने हो जायेंगे। और भी ध्यान से सुन! ये बात, ये ज्ञान मैं नहीं **सविता** = सर्व प्रेरक सकल जगदुत्पादक **अर्यः** = परमेश्वर ने मुझे दिया है मैं वही तुझे बता रहा हूँ।

वेद का यह मन्त्र भी यही कहता है **मित्रः कृष्टीन् अभिचष्टे** अर्थात् वह मित्र, वायु सहायता करता है किसकी? जो कृषि करते हैं कर्मशील होते हैं। कृषिकर्म के लिये अत्यन्त उपयोगी वृष्टिजल को प्राप्त कराने वाला वायु ही होता है इसीलिये मेघों को **वातजूताः** (वायुना प्रेरिताः) अथर्व. 4/15/10 वायु के द्वारा प्रेरित कहा है। तैत्तिरीय आरण्यक में पर्जन्य प्रवर्त्तक (मेघों के प्रेरक) इन वायुओं के सात प्रकार बताये हैं–

---

1. ओषधयो भूतभव्यमहोरात्रे वनस्पतिः।
संवत्सरः सहर्तुभिस्ते जाता ब्रह्मचारिणः।।
पार्थिवाः दिव्याः पशव आरण्याश्च ये।
अपक्षाः पक्षिणश्च ये ते जाता ब्रह्मचारिणः।।
(अथर्व. 11/5/20-21)

इन मन्त्रों में **सह ऋतुभिः** यथा काल, यथा ऋतु गमन करने के कारण ही इन्हें ब्रह्मचारी कहा गया है।

www.thearyasamaj.org

वराहवः। स्वतपसः। विद्युन्महसः। धूपयः। श्वापयः। गृहमेधाः। अशिमिविद्विषः।

(तै. आ. 1/9/4-5)

(1) अच्छी वर्षा को बुलाने वाले **वराहवः** (वरम् आह्वयन्ति) (2) स्वयं तपे हुए **स्वतपसः** (3) विद्युत् के समान चमकने वाले **विद्युन्महसः** (4) किसी सुगन्धित द्रव्यान्तर के बिना ही संसार को सुवासित करने वाले **धूपयः** (5) शीघ्रता से व्याप्त होने वाले **श्वापयः** (6) घर को पवित्र करने वाले **गृहमेधाः** तथा अन्तिम प्रकार (7) कृष्यादि कर्म के विघातक तत्वों से द्वेष करने वाले अर्थात् कृष्यादि कर्म के अनुकूल बहने वाले **अशिमिविद्विषः** कहे जाते हैं।

इसलिये **मित्राय** उस मित्र वायु के लिये **घृतवत् हव्यं जुहोत** घृत से युक्त हव्य पदार्थ का हवन करो। वह हवि कहाँ डालें, कैसे डालें के उत्तर में इसी सूक्त में बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा है– **अग्नौ मित्राय हविराजुहोत** (मन्त्र- 5) हे मनुष्यो! अग्नि में उस मित्र वायु के लिये हवि अर्पित करो। अब प्रश्न होता है वह हवि देने का अधिकार किसको है तो इसका भी स्पष्टीकरण इसी सूक्त में द्रष्टव्य है–

मित्राय पञ्च येमिरे जना अभिष्टिशवसे। देवान्विश्वान् बिभर्ति। (ऋ. 3/59/8)

अर्थात् **पञ्च जनाः** समाज के चारों वर्ण तथा इनके अतिरिक्त पाँचवाँ निषाद जो शूद्र से भी निकृष्ट है ये सभी **मित्राय येमिरे** मित्र वायु के लिये हवि प्रदान करने के अधिकारी हैं। **(पञ्च जनाः निषादपञ्चमाश्चत्वारो वर्णाः मित्राय येमिरे हवींष्युद्यच्छन्ति-** इति सायणः) **सः विश्वान् देवान् बिभर्त्ति** वही मित्र वायु सर्वत्र गतिमान् होकर इन आहुत पदार्थों की पोटली बाँध कर उन तक पहुँचा कर समस्त देवों का भरण-पोषण करता है। इस प्रकार यदि हम चाहते हैं कि सभी देव मुझ पर प्रसन्न हों तो उसका एक मात्र सरल व सहज उपाय है कि हम घृत से युक्त मधुर मिष्ट पदार्थों की अन्नादि की आहुति अग्नि में प्रदान करें। वेद कहता है तुम अधिकार की बात करते हो या सोचते हो तो सुनो! यज्ञ करना, मन्त्रोच्चारण करना इसका अधिकार मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी को भी मैंने दे रखा है। अन्तर केवल इतना है तुम्हारी वाणी स्पष्ट है उनकी अस्पष्ट है।

उद्गातेव शकुने साम गायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि। .....

सर्वतो नः शकुने भद्रमावद विश्वतो नः शकुने पुण्यमावद।।

आवदंस्त्वं शकुने भद्रमावद तूष्णीमासीनः सुमतिं चिकिद्धि नः।। (ऋ. 2/43/1-2)

इन मन्त्रों में शकुनि शकुन्ति इन शब्दों से पक्षी को संबोधित किया है। क्योंकि वह शक्त है समर्थ है। (शक्लृ शक्तौ + उनि, **शकेरुनोऽन्तोऽन्त्युनयः** उणादि. 3/49)। परमेश्वर का यही विधान है। यदि वह इन्हें

www.thearyasamaj.org

समर्थ न बनाये तो इनका जीवन अत्यन्त कठिन हो जायेगा। परमेश्वर ने इन्हें पंख दिये हैं जिन्हें देख कर हर कोई सोचता है काश मेरे पास भी पंख होते। अस्तु।

मन्त्र में कहा है– हे **शकुनि** = पक्षी तू **उद्गातेव** उद्गाता गान करने वाले ऋत्विक् के समान प्रातःकाल सर्वप्रथम उठकर हिंकार करते हुए (कहीं गायों का रंभाना, कहीं पक्षियों का चहचहाना, कहीं बकरी का में में करना आदि के द्वारा) साम का गान करता है तू ब्रह्मपुत्र परमेश्वर का पुत्र बनकर तद्वत् **सवनेषु** सृष्टि के विविध यज्ञों में सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त पर्यन्त **शंससि** शंसन कर रहा है। तू सब ओर से हम सब के लिये **भद्रम् आवद** भद्र का पुण्य का ही वाचन, आवाहन कर। तू बोलता हुआ हमारे लिये भद्र ही बोल और तू चुप रहता हुआ भी हमारे लिये सुमति का ही उद्बोधन कर।

छान्दोग्य उपनिषद् (2/2-9) में जिस साम का गान सम्पूर्ण प्रकृति में चराचर जगत् में हो रहा है हम उसको जानें और उसके वास्तविक अभिप्राय को समझकर अपने जीवन को उत्प्रेरित करें, आदि ऋषियों का कथन इन्हीं वेदमन्त्रों की व्याख्या है यह कहा जा सकता है। वर्त्तमान युग में जब शंकराचार्य जी को मण्डनमिश्र के घर की पहचान बतानी थी। उस समय–

स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं
कीराङ्गना यत्र गिरो गिरन्ति।
द्वारस्थनीडान्तर सन्निरुद्धा
अवेहि तन्मण्डनमिश्र धाम।।

अर्थात् जहाँ जिस घर के सामने जिस घर के बड़े-बूढ़े ही नहीं तोता-मैना आदि पशु-पक्षी भी स्वतः प्रमाण क्या है, परतः प्रमाण क्या है? जैसी गूढ़ चर्चायें परस्पर किया करते हैं आदि कथन तत्कालीन संस्कृत युग की वैदिक परम्परा का उज्ज्वल ऐतिहासिक पक्ष है। साथ ही मण्डनमिश्र व शंकराचार्य जी का वह प्रसिद्ध शास्त्रार्थ जिसमें एक विदुषी नारी ने मध्यस्थता ही नहीं की थी अपितु अपने बुद्धि कौशल से शंकराचार्य जी को पराजित भी किया था, अविस्मरणीय है। यह प्रकरण उस युग में महिलाओं की स्वतन्त्रता तथा उनके वैदुष्यपूर्ण व्यक्तित्व का सच्चा मार्ग दर्शक है। अस्तु। नव सम्वत्सर के आरम्भ में वसन्त ऋतु में प्रकृति का यह गान अत्यन्त मनोहारी व शिक्षाप्रद है। प्रातःकाल उठें, भ्रमण करें और प्रकृति का आनन्द लें।

इस मन्त्र की व्याख्या निरुक्त के दैवतकाण्ड में महर्षि यास्क द्वारा स्वीकृत मित्र नाम वायु का है यह मान कर की है। वस्तुतः यह सम्पूर्ण सूक्त मित्र शब्द से आदित्य का वर्णन करता है। मित्रों का भी मित्र तो वह परमात्मा ही है।

●

– आचार्या नन्दिता शास्त्री

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीयम्

वैदिक तप- त्याग के आदर्श रूप श्रीराम–

अथर्ववेद में एक सूक्त है जिसका देवता है स्कम्भ। स्कम्भ कहते हैं खम्भे को जिस पर भवन खड़ा होता है। यहाँ स्कम्भ से परमेश्वर कहा गया है क्योंकि वह सर्वाधार है। इस सूक्त के अनेक मन्त्रों में– **स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः**। (अथर्व. 10/7/4) अर्थात् वह ब्रह्म ही स्कम्भ है वही सब सुखों का लोक लोकान्तरों का इस सम्पूर्ण सृष्टि का आधार है यह कहा है। इस सूक्त में एक मन्त्र आता है–

यत्र तपः पराक्रम्य व्रतं धारयत्युत्तरम्।
ऋतं च यत्र श्रद्धां च आपो ब्रह्म समाहितः॥

(अथर्व. 10/7/11)

अर्थात् जहाँ तप पराक्रम करके बड़े प्रयास पूर्वक उत्कृष्ट व्रतों को धारण करता है तथा जहाँ ऋत (सृष्टि के अटूट नियम), श्रद्धा, आपः (जल) तथा ब्रह्म (अन्न) ये सब समाहित हैं। प्रकरण ब्रह्म का है किन्तु बात सामान्य रूप से हम सब पर घटती है परमेश्वर शिक्षा देता है कि संसार में जो भी उत्कृष्ट व्रत है उनका संरक्षण बिना तप के असम्भव है। जब तप पराक्रमी होता है तभी संकल्प फलीभूत होते हैं। व्रत कोई भी हो सकता है दान करना व्रत है, यज्ञ करना व्रत है, स्वाध्याय करना व्रत है, प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व उषः काल ब्राह्म वेला में जागरण व्रत है, माता-पिता की सेवा करना व्रत है, किसी अभक्ष्य अपेय पदार्थ का त्याग करना व्रत है पर इन व्रतों के पालन करने में जो कठिनाइयाँ आती हैं, मजबूरियाँ आती हैं, कभी बिगड़ी हुई आदतें परेशान करती हैं, कभी साथी लोग अपनी तरफ खींचते हैं फिर भी अपने व्रत को न छोड़ना, संकल्प से न डिगना, द्वन्द्वों को सहन करते जाना, उनसे संघर्ष करते रहना यह तप है। जब स्वयं ब्रह्म को तप करना पड़ा देवों को तप करना पड़ा तो अन्यों की क्या बात है?

ऋतं च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत॥

(ऋ. 10/190/1)

ऋत तथा सत्य परमेश्वर के अभीद्ध तप से प्रकट हुये हैं यह वेद में कहा है। ब्राह्मण ग्रन्थों में–

तदश्राम्यत् अभ्यतपत् समतपत् तस्य श्रान्तस्य तप्तस्य सन्तप्तस्य ललाटे स्नेहो यत् आर्द्रम् अजायत।

परमेश्वर ने सृष्टि रचना के लिये तप किया, श्रम किया (श्रमु तपसि खेदे च) तथा उस तप से श्रम से स्वेद बिन्दु टपक पड़े यह कहा है। फिर हम मनुष्यों की भला क्या बात है? इस देश में जब तक व्रतों के पालन में दृढ़ता थी लोग अपनी जान देकर भी उन मूल्यों की रक्षा करते थे और तभी तक यह भारत विश्व का गुरु कहा जाता था। श्री रामचन्द्रजी ने अयोध्या की राजगद्दी को छोड़कर चौदह वर्ष का वन गमन क्यों स्वीकार किया? केवल अपने पिता

www.thearyasamaj.org

की आज्ञा का पालन करने के लिये, उन्हें सत्यनिष्ठ बनाने के लिये। हमारे देश का इतिहास ऐसे बलिदानों से, उत्सर्गों से भरा पड़ा है। अपने सिद्धान्तों की मूल्यों की रक्षा के लिये जिन्होंने आत्मोत्सर्ग करना स्वीकार किया किन्तु अपने पथ से अपने व्रत से वे विचलित नहीं हुए। स्वयं भूखे रहकर अतिथि को खिलाया शरीर का कोई अङ्ग भी काटकर देना पड़ा तो दिया। यही नहीं आज के युग में भी जहाँ गुरु गोविन्द सिंह के छोटे-छोटे बच्चों ने दीवार पर जीवित चुन दिया जाना स्वीकार किया किन्तु धर्म परिवर्त्तन नहीं किया। ऐसे व्रती संकल्प निष्ठ बच्चों का निर्माण करने वाली माताओं बहिनों ने राष्ट्र के परिवार के निर्माण के लिये क्या-क्या नहीं सहन किया इसे कोई लेखनी बद्ध नहीं कर सकता क्योंकि ऐसे उदाहरण कोई एक नहीं घर-घर में थे।

यहाँ बच्चों का निर्माण सुविधा सम्पन्न भवनों में नहीं, जङ्गलों में आश्रमों में होता था। कोई कमी नहीं होती थी फिर भी कोई राजा हो या रङ्क सबके लिये यह अरण्यवास की व्यवस्था थी। सबके पुत्र पुत्रियों को 25 वर्ष तक यह कठिन ब्रह्मचर्य व्रत, यह कठोर तप, यह अभाव का जीवन, भिक्षा का जीवन, दो कपड़ों में रहने का जीवन जीना ही पड़ता था। फिर भी उनमें कोई दीनता या हीनता नहीं होती थी। वे दिव्य आध्यात्मिक सम्पदा से देदीप्यमान, प्राकृतिक ऊर्जा से ओत-प्रोत, आत्मविश्वास से परिपूर्ण होते थे। छोटे से बालक नचिकेता का यमराज के सामने जो कि उसके लिये वरदाता बनकर खड़े थे उन्हीं को सीख देते हुए यह कहने का साहस करना कि–

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा।

कोई धन से तृप्त नहीं होता यमाचार्य! फिर धन तो मुझे मिल ही जायेगा जब आप के दर्शन मैंने कर लिये हैं मैं आपके पास इसके लिये नहीं आया, यह सोच सकना और कह देना गुरुकुलीय शिक्षा की ही देन है। जो मनुष्य को भविष्य में संसार की पहाड़ जैसी कठिनाइयों को दुःखों को भी हँसते हुए सहन करने का साहस प्रदान करती थी। गुरुकुल में अध्ययन कर चुकने के बाद संसार के बड़े से बड़े वैभव को प्राप्त कर भी वे इतराते नहीं थे। न ही किसी के स्वत्व को हड़पने की चेष्टा करते थे। राजा भी विदेह और राजर्षि जैसी पदवी से विभूषित होते थे। राजभवनों में अध्यात्म की ऊँचाइयों पर चर्चा होती थी। स्वाध्याय प्रेमी उपनिषदों के अध्येता मेरी इन बातों का अर्थ समझ सकते हैं। ये कोई काल्पनिक उड़ानें नहीं हैं। राजाओं पर ऋषियों की तपस्वियों की पकड़ थी। राजभवन सदा उनके स्वागत के लिये अनावृत रहते थे। त्याग और समर्पण इस धरती का खिलौना था।

बात तप की चल रही है और आज राजनवमी है ऐसे अवसर पर कैसे भूल जाऊँ उस चरित्र को जिसका जीवन ही त्याग और तपस्या पर आधारित था। चार भाई थे कोई किसी से कम नहीं। मैं तो वाल्मीकि रामायण के इन प्रसङ्गों को पढ़ती हूँ तो मेरी आँखों से झर-झर आँसू बहने लगते हैं अगर आज वाल्मीकि न होते उनका यह काव्य न होता रामायण न होती तो क्या हम अपनी वैदिक संस्कृति पर अभिमान कर सकते थे?

अनुव्रतः पितुः पुत्रो पुत्र पिता का अनुव्रती हो यह वेद में कहा है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्री राम उसके साक्षात् अवतार थे। रामायण का वह प्रसङ्ग जहाँ हर तरफ राम के राज्याभिषेक की तैयारियाँ चल रही हैं, सारे नगरवासी आनन्द में मग्न प्रसन्नता से विभोर हो रहे हैं और सूर्योदय की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि कब प्रभात हो और राम का राज्याभिषेक हो। स्वयं राम उनकी धर्मपत्नी सीता, माता कौशल्या सभी आत्मतृप्त हैं अचानक राम का राजभवन में बुलाया जाना और वहाँ जाकर पिता को मलिन वसन, मलिन मुख, अधोमुख जमीन पर पड़े

www.thearyasamaj.org

देखना, जिनके मुख से शब्द नहीं निकल पा रहे हैं जो राम को देखते ही केवल राम इतना कहकर अश्रुपूरित हो निरीह आँखों से देख रहे हैं। ऐसे में राम माता कैकेयी से सारी बातें जानकर बिना किसी आरोप आवेश और आक्रोश के केवल विनम्रता पूर्वक यही कहते हैं कि मुझे दुःख इस बात का है कि पिता ने अपने मुख से मुझे यह आदेश क्यों नहीं दिया? क्या मेरे पिता को अपने पुत्र पर अपने पुत्र की आज्ञाकारिता पर विश्वास नहीं था? वाल्मीकि के शब्दों में–

अलीकं मानसं त्वेकं हृदयं दहतीव मे।
स्वयं यन्नाह मां राजा भरतस्याभिषेचनम्॥

(अयो. 15/6)

मेरा हृदय मात्र यह सोचकर दग्ध हो रहा है कि स्वयं राजा ने अपने श्री मुख से भरत का राज्याभिषेक होगा इन मंगल वचनों को क्यों नहीं कहा? मैं तो पिता के इतना कहते ही स्वयं प्रसन्न होकर–

अहं हि सीतां राज्यं च प्राणानिष्टान् धनानि च।
हृष्टो भ्रात्रे स्वयं दद्यां भरताय प्रचोदितः॥

यह सम्पूर्ण राज्य, धन, वैभव यहाँ तक कि आवश्यकता पड़ने पर अपनी धर्मपत्नी सीता को तथा अपने प्राणों को भी मैं अपने भरत भाई के लिये उपस्थित कर देता। यहाँ पिता ने मुझसे वन गमन के लिये क्यों नहीं कहा यह न कहकर भरत का अभिषेक होना है यह क्यों नहीं कहा यह कहना भी श्रीराम की महनीयता का द्योतक है। उधर माता कैकेयी से भी वे अधिकार पूर्वक यही कहते हैं– हे कैकेयि। क्या आपको मेरे गुणों पर भरोसा नहीं था जो आपने यह बात सीधे मुझसे न कहकर राजा से कही और व्यर्थ उन्हें दुःखी किया–

न नूनं मयि कैकेयि किंचिदाशंससे गुणान्।
यद्राजानमवोचस्त्वं ममेश्वरतरा सती॥ (अयो. 15/24)

इसी प्रसंग में श्री राम के साथ वन गमन के लिये सीता के बार-बार अनुरोध करने पर भी जब जंगल की भयावहता को दिखाकर श्री राम सीता को वन गमन से रोकने का प्रयत्न करते हैं तो अन्त में सीता का तेज जाग उठता है और वह किसी बात की परवाह किये बिना श्रीराम से कहती हैं मुझे नहीं पता था आप ऐसे डरपोंक वीर्यहीन हैं जो जंगल में मेरी रक्षा नहीं कर सकते? यदि मेरे पिता को यह पता होता कि आप केवल शरीर से ही पुरुष हैं आपका आचरण स्त्रियों जैसा है तो वे कभी भी आपको अपना जामाता (दामाद) नहीं बनाते।

किं त्वा अमन्यत वैदेहः पिता मे मिथिलाधिपः।
रामं जामातरं प्राप्य स्त्रियं पुरुषविग्रहम्॥
अनृतं बत लोकोऽयमज्ञानाद्यदि वक्ष्यति।
तेजो नास्ति परं रामे तपतीव दिवाकरे॥

अर्थात् राम चमकते हुए सूर्य के समान तेजस्वी है, यह संसार का कथन असत्य है वस्तुतः उन्हें आपके असली स्वरूप का पता नहीं है इसीलिये वे ऐसा कहते हैं। एक आदर्श पत्नी का अपने पति के प्रति अनन्य

www.thearyasamaj.org

प्रेम व अधिकार पूर्वक कहे गये इन वचनों को सुनकर राम अपने असली रूप को धारण कर बड़े स्नेह से आलिङ्गन में भर कर सीता से कहते हैं– हे शुभानने! तेरी रक्षा में समर्थ होने पर भी तुझे बिना अच्छी तरह तैयार किये मैं तुझे अपने साथ वन में कैसे ले जा सकता था? हे मैथिलि! मैं तेरा साथ तो कभी छोड़ ही नहीं सकता। हम दोनों ने अग्नि को साक्षी देकर जीवन भर साथ रहने की प्रतिज्ञा की है वह बन्धन हमारा भला कैसे टूट सकता है? जैसे सूर्य की किरणें कभी सूर्य से अलग नहीं हो सकतीं उसी प्रकार मेरा तेरा पृथक् होना भी असम्भव है। मैं यहाँ स्पष्ट कर दूँ धोबी के कहने से राम के सीता परित्याग की बात कोरी कल्पना है। यह ''उत्तररामचरित'' के आधार पर प्रक्षिप्त उत्तरकाण्ड है। क्योंकि वाल्मीकि रामायण में बाल काण्ड के आरम्भ में ही जहाँ संक्षेप से रामायण में वर्णित घटनाओं का उल्लेख है वहाँ यही लिखा है– रावण के मारे जाने पर सीता को प्राप्त कर श्रीराम अत्यन्त लज्जित हुए और उन्होंने सीता की अग्नि परीक्षा ली जिससे ऋषिगणों सहित सम्पूर्ण त्रैलोक्य सन्तुष्ट हुआ। तथा श्रीराम सीता को लेकर अयोध्या वापिस आ गये और इसके बाद वहाँ वाल्मीकि रामायण में राम के राज्य का यशोगान ही किया है वहाँ कहीं भी धोबी वाली घटना और सीता के परित्याग की चर्चा नहीं है। अस्तु।

बात श्रीराम की चल रही है वैदिक आदर्श और त्याग की चल रही है अतः मैं आगे चलूँ– देखें! चित्रकूट का वह दृश्य! जब भरत राम को वापिस बुलाने के लिये व्याकुल होकर जंगल में पहुँचते हैं। उधर राम जंगल में दूर से उठती हुई धूल को देखकर उसका कारण जानने के लिये लक्ष्मण को भेजते हैं तो वे वापिस आकर सन्देश देते हुए कहते हैं भैय्या! लगता है ये भरत हमें यहाँ भी नहीं छोड़ने वाला। ये तो हमें जंगल से भी भगाने के लिये पूरी सेना लेकर आया है। आप तो अब धनुष बाण लेकर बस युद्ध करने के लिये तैयार हो जाइये! पर श्रीराम लक्ष्मण के इन वचनों को सुनकर यत् किञ्चित् भी विचलित हुए बिना महाबली भाई भरत स्वयं आये हैं? फिर तो वहाँ धनुष और बाण की कोई आवश्यकता ही नहीं है। अस्तु। लक्ष्मण! तुम्हें पता होना चाहिये यह भरत शोक से व्याकुल और स्नेह से आर्द्र होकर हमें देखने के लिये, हमें अयोध्या वापिस ले चलने के लिये ही यहाँ आया है। फिर वे पूछते हैं–

विप्रियं कृतपूर्वं ते भरतेन कदा नु किम्।
ईदृशं वा भयं तेऽद्य भरतं यद् विशङ्कसे॥

क्या इससे पूर्व आज तक कभी भरत ने तुम्हारा कोई अप्रिय किया है जो आज भरत को देखकर तुम्हारे मन में भरत के प्रति ऐसी शंका उत्पन्न हो रही है? देखो! भरत के प्रति कहा गया तुम्हारा कोई भी अप्रिय कठोर वचन स्वयं मेरे लिये ही कहा गया है तुम यही समझो। दूसरी बात– क्या विपत्ति आने पर कोई पुत्र पिता का अथवा कोई भाई अपने भाई का प्राण हरण कभी कर सकता है? तुमने यह सोच कैसे लिया? सुनो!–

यदि राज्यस्य हेतोस्त्वम् इमां वाचं प्रभाषसे।
वक्ष्यामि भरतं दृष्ट्वा राज्यमस्मै प्रदीयताम्॥
उच्यमानो हि भरतो मया लक्ष्मण तद्वचः।
राज्यमस्मै प्रयच्छेति बाढमित्येव वक्ष्यति॥ (अयो. 68/17,18)

www.thearyasamaj.org

हे लक्ष्मण! यदि राज्य की कामना से तुम ने ऐसे वचनों का प्रयोग किया है तो देखो! भरत अभी मेरे पास आ रहा है और मैं उसे देखकर यह कह दूँगा कि ऐ भरत! तुम यह राज्य अपने इस छोटे भैय्या लक्ष्मण को दे दो तो मेरे द्वारा कहे जाने पर वह निश्चय ही बाढम् = ठीक है यही कहेगा। श्रीराम का भरत के प्रति यह कहना कितनी बड़ी बात है कितना विश्वास है श्रीराम को अपने माता-पिता द्वारा प्रदत्त संस्कारों पर कि जैसे मैं निर्मोही हूँ, मुझे कोई लालसा नहीं हैं केवल कर्त्तव्य का पालन ही मेरा उद्देश्य है भरत भी ठीक वैसा ही मेरे जैसा ही आज्ञाकारी और निर्मोही है वह मुझसे किञ्चित् भी कम नहीं है। और यही हुआ भी भरत राम को ढूँढते हुए जब राम से मिलते हैं तो उनके चरणों में लोट-लोट कर यही प्रार्थना करते हैं कि आप वापिस चलिये अपना राज्य सम्भालिये राज्य आपका है मेरा नहीं। और उधर राम भी नहीं जब पिता ने हम दोनों को भिन्न-भिन्न आज्ञायें दी हैं तो उसका पालन करना मेरा और तुम्हारा दोनों का धर्म है। इस प्रसङ्ग में किसी कवि की लिखी ये पंक्तियाँ बार-बार स्मरण हो आती हैं कि–

राजतिलक को गेंद बनाकर खेलन लगे खिलाड़ी।
इधर राम और उधर भरत दोनों ने ठोकर मारी॥

सचमुच आज के युग में यह अविश्वसनीय है। अन्त में पुरवासियों को समझाते हुए श्रीराम का यह कथन कि जो स्नेह और सम्मान आपका मुझ पर था यदि आप मुझे प्रसन्न करना चाहते हैं तो वही स्नेह और सम्मान आप भरत भाई पर लुटाइये! जाइये। वस्तुतः भाई-भाई का यह प्रेम उदाहरणीय है।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।

(अथर्व 3/30/3)

वेद का यह वाक्य इन्होंने केवल पढ़ा नहीं अपितु अपने जीवन में उतारा हुआ था। दोनों भाई जहाँ केवल माता-पिता की आज्ञा और कर्त्तव्य पर ही विचार कर रहे हैं और उसके लिये जो भी तप और त्याग करना हो उन्हें वह स्वीकार्य है। विचार करें! क्या आज इस आदर्श की लकीर भी हमारे परिवार समाज और राजनीति में है? केवल राम नाम की चदरिया ओढ़ने तथा दिन रात हरे रामा, हरे रामा का संकीर्त्तन करने से क्या हमारा उद्धार हो सकेगा?

अन्त में ऐसे तप-त्याग की आधार शिला गुरुकुलीय जीवन है यह चर्चा मैंने की है उसी प्रसङ्ग में पाठकों की जानकारी के लिये मैं लिखना चाहूँगी कि अभी पिछले दिनों पाणिनि कन्या महाविद्यालय के वार्षिक उत्सव के अवसर पर प्रातःकाल जब दीक्षान्त समारोह हुआ और उसमें कन्याओं ने आत्म निवेदन प्रस्तुत किया तो उसे सुनकर लोग आत्म सन्तुष्ट व प्रसन्न थे और कन्याओं के आत्मविश्वास से भरी तेज पूर्ण वाणी की प्रशंसा कर रहे थे। फिर आत्म विश्वास हो भी क्यों न? जहाँ सम्पूर्ण पातञ्जल महाभाष्य व निरुक्त पंक्तिशः गुरुमुख से अधीत हो और अध्यापन कराने का अनुभव भी प्राप्त हो। साथ ही बाहिर जाकर यज्ञ प्रवचनादि के द्वारा प्रचार भी इनसे कराया गया हो। आपको जानकर अतिशय प्रसन्नता होगी कि– हम तो सदैव अपनी इन ब्रह्मचारिणियों से आशान्वित व उत्साहित रहती हैं।

●

– आचार्या नन्दिता शास्त्री

www.thearyasamaj.org

पाणिनि कन्या महाविद्यालय की नव सम्वत्सर हेतु शुभकामनाएँ

अखिलानन्द पाण्डेय 'अखिल'

यह पाणिनि संस्थान शुभद संदेश गुँजाए घर घर!
आर्य शक्ति उत्कर्ष करे फिर नव सम्वत्सर॥

तम-प्रकाश संघर्ष सदा घटता आया है जग में।
किन्तु अँधेरा कभी टिका क्या ज्योतिर्मय मग में॥
अमृतमय आलोक चिरन्तन अपनी थाती।
जलती बलिदानी सन्तानों के प्राणों की बाती॥
शत्रु तिमिर को मिटा विजय पायेंगे संस्कृति स्वर।
वह पाणिनि संस्थान शुभद संदेश गुँजाए घर घर॥1॥

संस्कृति-संस्कृत दिव्य साधना सफल बना दो।
मातृ-शक्ति की ज्वालाएँ हर हृदय जला दो॥
देश-भक्ति का ज्वार उठा दो ऋचा गान से,
वेद-मंत्र का तंत्र प्रभो! हर हाथ थमा दो॥
सुख समृद्धिमय निज समाज को कर दो प्रभुवर।
आर्य-शक्ति उत्कर्ष करे फिर नव सम्वत्सर॥2॥

आत्म विस्मरण व्याधि मनों से दूर भगा दो।
आर्य-गुणों से मण्डित मानव पुनः जगा दो॥
पुनः बना दो जगत् गुरु यह प्यारा भारत।
नया वर्ष उत्कर्ष करे जन मन का सत्वर॥
यह पाणिनि संस्थान शुभद संदेश सुनाये घर घर॥3॥

●

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, विक्रमी संवत् 2077
11 अप्रैल 2013, नव सम्वत्सर

www.thearyasamaj.org

3,4,5 मार्च महर्षि पाणिनि मन्दिरम् का उद्घाटन सम्पन्न त्रिदिवसीय महोत्सव का वृत्तान्त

– डॉ प्रीति विमर्शिनी

विगत 42 वर्षों से विश्व के क्षितिज पटल पर वैदिक आर्य संस्कृति एवं आर्ष पाठविधि का ध्वज लहराने वाले, मानव मात्र को वेद ज्ञानामृत का पान कराने वाले, विश्व के अनूठे विश्व प्रसिद्ध पाणिनि कन्या महाविद्यालय का चिर प्रतीक्षित वार्षिक महोत्सव तीन बृहत् विशिष्ट समायोजनों के साथ अत्यन्त गरिमामय शिक्षाप्रद कार्यक्रमों को प्रदर्शित करता हुआ पूर्ण भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। प्रतीत हो रहा था संस्था की मूर्त्तरूप दोनों आचार्याजन ही अप्रत्यक्ष रूप से समस्त वार्षिकोत्व का सञ्चालन करा रही थीं तथा अपने घोर परिश्रम से सिञ्चित बगिया को सुन्दर खिलता महकता देखकर आशीर्वाद की पुष्पवृष्टि कर रही थीं।

यद्यपि प्रयाग इलाहाबाद के महाकुम्भ के कारण यातायात की असुविधा तथा यू. पी. बोर्ड एवं बच्चों की परीक्षाओं के कारण समयाभाव की चर्चा लोग करते रहे तथापि आगन्तुकों का उत्साह कहीं से भी न्यून दृष्टिगोचर नहीं हुआ। आयोजन से एक दो दिन पूर्व से ही अनेकों की संख्या में आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, बिहार, मध्य प्रदेश, जम्मू, मुम्बई, दिल्ली आदि भारत के सुदूर प्रान्तों तथा उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल से भी अनेक आर्य महानुभाव हर्ष के इन अनमोल क्षणों को अपने नेत्रों से आलोकित एवं ज्ञान से अपने हृदयों को अभिसिञ्चित करने हेतु त्याग तपस्या के स्वेद कणों से अभिषिक्त सुवासित एवं संवर्धित इस पुण्य भूमि देवस्थली में पधार कर अपने को धन्य भाग्य समझ रहे थे।

विद्यालय के भव्य सिंह द्वार से प्रवेश करते ही सम्पूर्ण परिसर केसरिया ओम् ध्वज की लड़ियों से अच्छादित होने के कारण सूर्य की अरुणिम आभा से आलोकित हो देदीप्यमान हो रहा था। आगन्तुकों के स्वागत के लिए समुत्सुक प्रसन्नता से होले-2 झूमते हुए वन्दनवार सदृश आपस में मिलकर अभिनन्दन करते गगन चुम्बी वृक्ष, सामने ऊँची दीवारों पर चित्रित पूज्या दोनों तपस्विनी यशस्विनी विदुषीमणि पाणिनि कन्या महाविद्यालय की महीयसी संस्थापिका पूज्या आचार्या जी का जीवन्त चित्र तथा उसके नीचे लिखित पंक्तियाँ– '**आशीष प्राप्त कर प्रभुवर का हम दिव्य आत्मविश्वास लिये। बढ़ रहे आर्ष विस्तार हेतु लघु क्षमता साधन साथ लिये**' सबके हृदय में एक अपूर्व भाव का संचार कर रही थीं। साथ ही बड़े-2 डहेलिया एवं रंग-बिरंगे गेन्दा के पीले घने फूलों से गदराती झूमती महकती मदमस्त कर देने वाली क्यारियाँ वहीं छोटी-छोटी रंग-बिरंगी इठलाती तितलियों जैसी फूलों की अवली इन सब के बीच पीत गणवेश में सुसज्जित आचार्य

www.thearyasamaj.org

जनों के निर्देशन एवं संरक्षण में इधर-उधर तैयारी एवं विभिन्न व्यवस्थाओं में तत्पर, देववाणी संस्कृत भाषा में वाग् व्यवहार करती कर्त्तव्यनिष्ठा आत्मविश्वास एवं आध्यात्म तेज से युक्त देदीप्यमान आश्रम की देवबालाएँ सब कुछ मिल कर किसी अलौकिक दिव्य लोक की अनुभूति करा रहे थे। सम्पूर्ण विद्यालय परिसर अवर्णनीय हर्षोल्लास से परिपूर्ण दृष्टिगोचर हो रहा था सुअवसर था चिरप्रतीक्षित छः वर्षों से निर्मित हो रहे महर्षि पाणिनि स्मारक मन्दिरम् के उद्घाटन, दीक्षान्त समारोह तथा पूज्या आचार्या जी के हीरक जयन्ती वर्ष की सम्पूर्ति इन तीन समारोहों को अभिलक्षित कर आयोजित किये महोत्सव का। जिसका शुभारम्भ महाविद्यालय की पूर्व स्नातिका वर्त्तमान में गुरुकुल नजीबाबाद की संस्थापिका एवं सञ्चालिका विदुषी **आचार्या प्रियंवदा वेदभारती** जी के कुशल नेतृत्व में सम्पन्न हुए देवयज्ञ से हुआ। जिसमें सभी उपस्थित श्रद्धालुओं ने श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ प्रदान कीं आज के प्रथम दिवस के मुख्य यजमान थे– **श्रीमती राज मल्होत्रा** (नई दिल्ली), **श्री ज्ञानप्रकाश आर्य** (गया), **प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी** (खलीलाबाद), **श्री रमामित्र जी शास्त्री** (इलाहाबाद)।

यज्ञ के अनन्तर **साध्वी निर्मला योगभारती** जी हैदराबाद का जीवनोपयोगी सारगर्भित हृदयग्राही आध्यात्मिक प्रवचन सबके लिये प्रेरणादायी रहा। तदनन्तर पाणिनि मन्दिरम् के समक्ष सुरम्य प्रांगण में **पू. स्वामी धर्मानन्द** जी (संस्थापक- गुरुकुल आश्रम आमसेना) के करकमलों से ओ३म् ध्वजोत्तोलन हुआ। साथ ही विद्यालयीय ब्रह्मचारिणियों द्वारा समवेत स्वर से गाये गये **दोधूयतां वैदिक पताका विश्वजयिनी भारते** इस संस्कृत ध्वज गीत ने उपस्थित जनसमुदाय को जोश एवं उमंग से भर दिया सम्पूर्ण परिसर वैदिक धर्म की जय से गूँज उठा।

महर्षि पाणिनि मन्दिरम् (प्रज्ञा-मेधा मन्दिर सभागार) का उद्घाटन–

आर्य जगत् की गौरव ललाम विदुषीमणि **डा. प्रज्ञा देवी** जी की हीरक जयन्ती सम्पूर्ति वर्ष के उपलक्ष्य में उन्हीं के स्वप्न को साकार करते हुए मूर्त्तरूप देने से अधिक अनुपम अद्भुत अलौकिक महान् उपहार स्वरूप प्रस्तुत भेंट भला और क्या हो सकती है हाँ मैं बात कर रहीं हूँ उस अलौकिक दिव्य वस्तु की जिसके निर्माण की संकल्पना का सूत्रपात आज से 19 वर्ष पूर्व हो गया था। आर्ष पाठविधि के पुनरुद्धारक अनन्य ऋषिभक्त पदवाक्य प्रमाणज्ञ पूज्य गुरुवर्य **श्री पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु** जी की विलक्षण शिष्या अपनी अनुजा पं. मेधा देवी जी के साथ आ. डॉ. प्रज्ञा देवी जी ने अपने गुरुवर्य की स्मृति को चिरस्थायी रूप प्रदान करने के लिये पाणिनि कन्या महाविद्यालय की स्थापना की जहाँ से अब तक महर्षि पाणिनि की अनेक अनुकृतियाँ सुसज्जित हो राष्ट्र रूपी भागीरथी को निर्मल करने के लिये समर्पित हो चुकीं वहीं दूसरी तरफ भगवान् पाणिनि की शब्दमयी कृति को अमर बनाने के उद्देश्य से सम्पूर्ण अष्टाध्यायी

www.thearyasamaj.org

के लगभग 4000 सूत्रों को प्रस्तरोत्कीर्ण करवाकर महर्षि पाणिनि स्मारक मन्दिर निर्माण कर विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रशंसनीय चिरस्मरणीय अभिनव संकल्प किया था तथा उसे मूर्त्तरूप देने की प्रारम्भिक प्रक्रिया भी तत्कालीन आर्य यति मण्डल के अध्यक्ष **पू. स्वामी सर्वानन्द जी** महाराज के करकमलों से शिलान्यास कराकर किया था परन्तु दुर्भाग्यवश वो अपने जीवन काल में यह संकल्प पूर्ण नहीं कर सकीं बहुत शीघ्र ही वह सम्पूर्ण भार अपनी अनुजा के कन्धों पर डालकर अनन्त यात्रा के लिये प्रस्थान कर गयीं। इस संकल्प ध्वज को **आचार्या मेधा देवी जी** ने संभाला तथा उसे पूर्ण करने का संकल्प किया, कार्य प्रारम्भ हुआ बहुत कुछ सम्पन्न भी हुआ परन्तु उसका सम्पूर्ण निर्मित भव्य मूर्त्तरूप अपने नेत्रों से न देख सकीं किसे पता था पत्रिकाओं में अनेक विद्यालय के हितैषी वृद्ध जनों के लिये– **इनकी आँखे पाणिनि मन्दिरम् का पूर्ण भव्य स्वरूप अपनी आँखों से देख सकें**। ऐसी प्रार्थना करने वाला महान् व्यक्तित्व स्वयं ही अपनी संकल्पनाओं को, अपने परिश्रम को साकार रूप न देख सकेगा। अस्तु। ईश्वर की अद्भुत लीला एवं विधि के विधान के आगे मानव वाणी मूक हो जाती है उसे भला कौन समझ सकता है **कस्तद् वेद यदद्भुतम्, दैवाधीनं जगत् सर्वम्** अस्तु।

पुनरपि इस कार्य को विद्यालय की **आचार्या नन्दिता शास्त्री** जी ने जो पाणिनि मन्दिरम् निर्माण कार्य में प्रारम्भ से ही पू. आचार्या जी के साथ पूर्ण तत्परता एवं लगन से लगी हुई थीं उन्होंने इस उत्तरदायित्व को पूर्ण गम्भीरता से अपने कंधों पर लेते हुए अनेक प्रकार के संघर्षों को झेलते हुए भी अपने सूक्ष्म एवं कला पूर्ण कुशल निर्देशन में पूज्या आचार्या जी के स्वप्न को साकार रूप प्रदान कर सबको चकित एवं आह्लादित कर दिया और पूज्या आचार्या जी के हीरक जयन्ती सम्पूर्ति वर्ष पर 3 मार्च 2013 को उसका भव्य उद्घाटन सब के सामने प्रस्तुत कर दिया पूज्या आचार्या जी की आत्मा तृप्त हो गयी, महर्षि पाणिनि की श्वेत धवल प्रतिमा भी प्रसन्नता से मानों आशीर्वाद देती हुई प्रतीत हो रही थी उपस्थित जनसमुदाय मन्दिर की भव्यता कलात्मकता एवं सुन्दर उत्कृष्ट अलंकरण को देखकर हर्ष से बाग-बाग हो उठा। जब पाणिनि मन्दिरम् का उद्घाटन वर्त्तमान सदी के आदर्श पुरुष, जननायक, सेवा व्रती, वैदिक आर्य संस्कृति के परिपोषक, सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक **डॉ. बिन्देश्वर पाठक** जी के करकमलों द्वारा सुमधुर वेद मन्त्रोचार के साथ दीप प्रज्वलन यज्ञाहुति द्वारा सम्पन्न हुआ। उस समय सम्पूर्ण परिसर पुष्प वृष्टि, हर्षयुक्त करतल ध्वनि एवं महर्षि पाणिनि की जय, पाणिनि कन्या महाविद्यालय जयतितराम् जयतितराम् यावच्चन्द्रदिवाकरौ आचार्या जी का नाम रहेगा। महर्षि पाणिनि का नाम रहेगा आदि जय घोष से गुंजायमान हो उठा। पाणिनि मन्दिरम् की सीढ़ियाँ चढ़ते ही **तस्मै पाणिनये नमः** आकुमारं यशः पाणिनेः, पाणिनि शब्दः लोके प्रकाशते,

www.thearyasamaj.org

इति पाणिनि तत्पाणिनि तथा महर्षि पाणिनि के 14 प्रत्याहार सूत्रों की लयताल बद्ध अनुगूंज हृदय को झंकृत कर देने वाली किसी अलौकिक दिव्यलोक की अनुभूति करा रहे थे प्रतीत होता था मानों महर्षि पाणिनि धरा धाम पर अवतीर्ण हो अवश्य ही सूक्ष्म नेत्रों से अपनी कृति को इस रूप में अमर होते देखकर प्रसन्न हो आशीर्वाद प्रदान कर रहे होंगे। श्वेत संगमरमर के पत्थरों पर अनुवृत्ति सहित उट्टंकित महर्षि पाणिनि के 3996 सूत्रों तथा काकतीय शैली की मनोहारी कला से युक्त सम्पूर्ण मन्दिरम् की परिक्रमा करके सुसज्जित भव्य महर्षि पाणिनि प्रज्ञा-मेधा मन्दिर सभागार में प्रवेश करते हुये मञ्चासीन हुए।

इस सभागार के भव्य मञ्च को अपनी गरिमापूर्ण उपस्थिति से जो गौरवान्वित कर रहे थे उनमें सर्वप्रथम इस कार्यक्रम के अध्यक्ष पद से विभूषित दिल्ली से पधारे गुरुकुल गौतमनगर के संस्थापक पूज्य **स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती**, मुख्य अतिथि **डॉ. बिन्देश्वर पाठक** जी विशिष्ट अतिथि के रूप में भुवनेश्वर उड़ीसा से पधारे **डॉ. प्रियव्रत दास जी** इसके अतिरिक्त **डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री** (अमेठी) **सुश्री निर्मला योगभारती** (हैदराबाद) तथा इस पाणिनि मन्दिर के निर्माण हेतु कृत संकल्प महर्षि पाणिनि स्मारक मन्दिरम् निर्माण समिति के संयोजक प्रमुख **डा. नन्दनम् सत्यम् जी** हैदराबाद, आर्ष गुरुकुल आमसेना के संस्थापक **पू. स्वामी धर्मानन्द** जी, मुम्बई से पधारे आर्य श्रेष्ठ प्रसिद्ध उद्योगपति **श्री सुनील मान कटाला, आचार्या प्रियंवदा वेदभारती, सुश्री सूर्या देवी चतुर्वेदा** और विद्यालय की **आचार्या नन्दिता शास्त्री** एवं **डॉ. प्रीति विमर्शिनी** थे।

उद्घाटन समारोह का प्रारम्भ कन्याओं के वैदिक एवं सांगीतिक मंगलाचरण से हुआ। कुलगीत के अनन्तर जागृति आर्या का संस्कृत संभाषण तथा 'तुम जले तो भोर आया तुम बुझे तो थी दीवाली' आदि गीत की मधुर प्रस्तुति ने सभी को गौरवान्वित आह्लादित कर दिया। आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध गवेषक वैदिक विद्वान् **डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री**, अमेठी, ने समागत विशिष्ट जनों के स्वागत भाषण में बहुत ही ओजस्वी विचार रखते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती के नारी जागरण, नारी शिक्षा, नारी सशक्तीकरण तथा नारी अधिकार के लिये किये गये कार्य के बारे में बताया तथा सम्पूर्ण नारी जगत् की प्रतिमान वैदिक वाङ्मय की प्रकाण्ड विदुषी पाणिनि कन्या महाविद्यालय की संस्थापिका आचार्याओं द्वारा किये गये महान् कार्य की प्रशंसा करते हुए वर्त्तमान समय में उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला। साथ ही दोनों आचार्या जनों के बाद उसी परम्परा में दीक्षित वर्त्तमान समय में वेदविदुषी आचार्या नन्दिता शास्त्री एवं डॉ. प्रीति विमर्शिनी द्वारा पूर्ण कुशलता से सञ्चालित एवं सम्वर्धित किये जा रहे कार्यों की सराहना की।

विद्यालय की आचार्या विदुषी नन्दिता शास्त्री ने विद्यालय का परिचय देते हुए मन्दिर निर्माण की संकल्पना से लेकर निर्माण की सम्पूर्णता तक आने वाले संघर्षों की चर्चा करते हुए कहा कि– सन् 1993 में **पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी**

www.thearyasamaj.org

सरस्वती दीनानगर मठ के हाथों इसका शिलान्यास महाविद्यालय की संस्थापिका आचार्या **डॉ. प्रज्ञा-मेधा देवी जी** ने कराया था। उस समय इसका बजट 3 लाख था फिर 3 से 30 लाख हुआ और आज वह 3 करोड़ से भी अधिक की लागत से बन कर तैयार आपके सामने खड़ा है। 1 लाख की भी जमा पूँजी अपने पास नहीं थी जब सन् 2007 में भूमि पूजन कर इसका निर्माण आरम्भ किया गया था। इस निर्माण समिति के संयोजक प्रमुख डा. नन्दनम् सत्यम् जी ने ही सर्वप्रथम दो लाख देकर इस निर्माण कार्य को गति दी थी। आज आँखें भर आती हैं यह सोच कर कि दोनों विभूतियाँ (डॉ. प्रज्ञा-मेधा देवी) हमारे बीच नहीं है। इस निर्माण में आप सबका कण-कण योगदान सम्मिलित है आप सब बधाई के पात्र हैं। अनेक आर्थिक संघर्षों के साथ-साथ वाचिक संघर्ष भी आरम्भ से ही इसके साथ लगे रहे ऐसे संघर्षों ने हमें और मजबूत बनाया है हम यही कह सकते हैं। पाणिनि मन्दिरम् के अन्तर्गत व्यय हुए लगभग 40 लाख की राशि जो स्थपति को प्रदान करनी है तथा अन्तर्राष्ट्रीय छात्रावास के निर्माण के लिये भी सहयोग हेतु उपस्थित जन समूह का आह्वान किया। साथ ही **पुल्ला रेड्डी** जी, हैदराबाद द्वारा छात्रावास के एक तल के निर्माण की जानकारी देकर उनका आभार भी व्यक्त किया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पद से उद्बोधन देते हुए भुवनेश्वर के **डॉ. प्रियव्रत दास जी** ने विद्यालय के कन्याओं की प्रतिभा की सराहना करते हुए पू. आचार्या जी के तप त्याग से सिञ्चित यह वट वृक्ष सबके लिए प्रेरणादायक बनेगा तथा इस विद्यालय में जलाये हुये ज्ञान के दीपक से सभी आलोकित होंगे यह शुभाशंसा की।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए डॉ. बिन्देश्वर पाठक जी ने कहा कि– भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पर हजारों वर्षों से आक्रमण होते रहे हैं। इसमें ढाल बनी है ऋषियों की वाणी, इन्हें संरक्षित कर ही हम अपनी धरोहरों को बचा पायेंगे। इसके लिये सरकार की ओर देखने की जरूरत नहीं है ऐसे लोग आगे आएं जिन्हें भगवान् ने इस योग्य बनाया है। सरकार अन्य विकास करे और आप समाज निर्माण। अच्छे लोग धन कमायेंगे तभी वह धन अच्छे कार्यों में लगेगा। बालिकायें वेदाध्ययन करेंगी तो देश का बहुमुखी विकास होगा इत्यादि बहुत ही सारगर्भित एवं प्रेरणादायी वक्तव्य रखा। जब इस सभागार का केवल ढाँचा खड़ा था तब भी आपका यहाँ पदार्पण हुआ था और विशिष्ट सहयोग भी प्राप्त हुआ था। आज इस उद्घाटन रूपी गौरव पूर्ण कार्य को करके आप स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे थे वस्तुतः इतना महान् कार्य आप जैसे महान् व्यक्तित्व के हाथों ही सम्पन्न होना चाहिये था जो हुआ। अपने वक्तव्य में पाठक जी ने विद्यालय की प्रशंसा करते हुए आचार्य जनों की विशिष्टता तप, त्याग, साधना, परिश्रम एवं कन्याओं के निर्माण के प्रति समर्पण की भूरि-भूरि प्रशंसा की। पाणिनि मन्दिरम् का पूर्ण

www.thearyasamaj.org

भव्य कलात्मक रूप देखकर हृदय से गद्‌गद बड़े ही विभोर मन से एक ज्येष्ठ अभिभावक के रूप में इस अवसर पर आपने **आचार्या नन्दिता शास्त्री** जी को अपनी ओर से चन्दन की माला पुष्पगुच्छ व कीमती शाल ओढ़ा कर अभिनन्दन एवं सम्मान किया। आज सारी प्रसन्नताओं के बीच प्रातःकाल से ही हर क्षण पूज्या आचार्या जी का स्मरण आ रहा था बार-2 आँखें भर आ रही थीं काश! आचार्या जी अपने नेत्रों से मन्दिरम् के इस भव्य रूप को देख पातीं। प्रसन्नता से वो गले लगा लेतीं इस कमी को हम हर क्षण अनुभव कर रहे थे जिसे बहुत कुछ दूर किया हमारे सम्मान्य पाठक जी ने।

कार्यक्रम के अध्यक्ष **पू. स्वामी प्रणवानन्द** जी ने भी राष्ट्र निर्माण, समाज निर्माण में पाणिनि कन्या महाविद्यालय का महत्त्वपूर्ण योगदान है क्योंकि यहाँ मातृशक्ति का निर्माण होता है और माँ ही बच्चे की प्रथम पाठशाला है कहा। इस प्रकार अध्यक्षीय भाषण के अनन्तर मञ्चासीन विशिष्ट महानुभावों को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मान किया गया और साथ ही पाणिनि मन्दिर निर्माण समिति के संयोजक प्रमुख सभी सभाओं एवं कार्यक्रमों में जोशीले स्वर से अपने भावों को व्यक्त करने वाले सबके दादा जी एवं दादी जी जो आज अपने मुखारविन्द से कुछ कह तो न पाये बस सम्पूर्ण मन्दिर परिसर की भव्यता को तृप्त एवं सन्तुष्ट हो प्रसन्न नेत्रों से निहार रहे थे। सम्पूर्ण निर्माण में उनके निःस्वार्थ समर्पण युक्त योगदान के लिये स्मृति चिह्न, माला एवं शाल देकर सम्मानित किया गया इस अवसर पर दादा जी का लगभग पूरा परिवार उपस्थित था। साथ ही पाणिनि मन्दिर में निर्मित सम्पूर्ण काकतीय शैली की शिल्प कला के निर्देशक स्थपति हैदराबाद के **श्री टी. बालगंगाधरन्** को भी मञ्च पर स्मृति चिह्न प्रमाणपत्र आदि देकर सम्मानित किया गया।

समारोह के अन्त में आचार्या नन्दिता शास्त्री जी ने सभी का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए समारोह में समागत जनों का तथा विद्यालय के हितैषी पाणिनि मन्दिर निर्माण में सहयोगी श्रद्धालु जनों का भावपूर्ण हृदय से धन्यवाद ज्ञापन किया तथा उद्‌घाटन समारोह की समाप्ति एवं शान्तिपाठ की घोषणा की। आज के इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का कुशल संचालन विद्यालय के सम्मानित सदस्य **डॉ. ब्रह्मानन्द चतुर्वेदी** ने किया।

3 मार्च सायंकाल **संगीता वेदरत्न** के प्रभावोत्पादक संयोजकत्व में कन्याओं के सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए जिसमें सबसे अधिक आकर्षण का केन्द्र रहा पूज्या आचार्या डॉ. प्रज्ञा देवी जी के 75वें जयन्ती वर्ष सम्पूर्त्ति के उपलक्ष्य में उनके जीवन पर आधारित संगीत रूपक (नृत्य नाटिका) की प्रस्तुति जिस ने सबको झकझोर दिया। सबने खड़े होकर तालियों से इस प्रस्तुति को सम्मानित किया। कु. श्री तेजा नन्दनम्, कौमुदी, दिव्या, स्नेहा, प्रिया आर्या सभी दशम कक्षा की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत इस नृत्य नाटिका को तैयार कराया था महाविद्यालय की सुयोग्य स्नातिका अपनी आचार्या जनों की बहुत ही प्रियपात्र, साहित्य

www.thearyasamaj.org

संगीत कला सुभूषिता **श्रीमती जाह्नवी भार्गव** बैंगलोर ने। **डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री** ने अपने उद्‌बोधन में सभी कार्यक्रमों की भूरि भूरि प्रशंसा की विशेष रूप से नृत्य नाटिका की। उन्होंने इस के औचित्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि– संगीत नृत्य का आदि जनक तो सामवेद ही है। जहाँ चारों वेदों का अध्ययन-अध्यापन होता हो वहाँ अभिव्यक्ति की इस विधा का परित्याग कैसे किया जा सकता है? नितान्त मर्यादित सात्त्विक शास्त्रीय शैली की इस प्रस्तुति की सभी जनों ने प्रशंसा की।

इसे छन्दोबद्ध किया था अत्यन्त सरल निश्छल प्रभुभक्त **श्री अखिलानन्द पाण्डेय** जी ने। वेद एवं संस्कृत पढ़ने वाली तथा शस्त्र सञ्चालन करने वाली कन्याओं द्वारा ऐसी कलात्मक हृदयावर्जक भावपूर्ण प्रस्तुति वस्तुतः वेदोक्त अग्नीषोमात्मक शिक्षा का ही प्रतिफल है। इससे पूर्व 'ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आँख में भर लो पानी' इस गीत पर कन्याओं के जीवन्त अभिनय ने सबको रोमाञ्चित व द्रवित कर दिया। इस गीत में कक्षा 10 की प्रबुद्ध छात्रा **नूतन आर्या** का अभिनय व नेतृत्व सराहनीय था।

कक्षा 12 की छात्राओं ने समयानुरूप पाणिनीय आर्ष शिक्षा पर आधारित ज्ञानवर्धक परिचर्चा प्रभावोत्पादक एवं रोचक शैली में प्रस्तुत किया जिसकी चर्चा भी जोरों पर थी। इस परिचर्चा के बाद '**लहराये-2 जग में झण्डा पाणिनि मन्दिर का**' गीत की प्रस्तुति हुई। मधुरेण समापयेत् इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए कार्यक्रम का समापन शिवसंकल्प सूक्त के मन्त्रों के मधुर शास्त्रीय गायन से हुआ। आज के कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे **पू. स्वामी धर्मानन्द** जी ने सभी बालिकाओं को आशीर्वाद प्रदान किया।

दीक्षान्त महोत्सव–

4 मार्च प्रातःकालीन यज्ञ विद्यालय की आचार्या नन्दिता शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में मुम्बई से पधारे **श्री अरुण एब्रोल**, **श्री मिठाईलाल जी** तथा **श्री अशोक बांगिया जी** सपत्नीक **श्री वाचोनिधि आर्य** (गाँधीधाम) **श्री उमाशंकर जायसवाल** इलाहाबाद इन सभी विशिष्ट यजमानों ने देवयज्ञ सम्पन्न किया तत्पश्चात् **श्री उमाशंकर जायसवाल** जी को पाणिनि मन्दिरम् निर्माण में किये गये उत्कृष्ट सहयोग हेतु शाल एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

अनन्तर उसी यज्ञशाला में वेद व्याकरण निरुक्त दर्शन उपनिषदादि अध्ययन पूर्ण कर चुकीं चौदह विद्याव्रतस्नातिकाओं का विधिवत् समावर्त्तन संस्कार विदुषी आचार्या नन्दिता शास्त्री जी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। समावर्त्तन संस्कार के क्रम में नव स्नातिकाओं को जो भावपूर्ण जीवनोपयोगी प्रेरणादायक उपदेश दिये गये वे न केवल दीक्षित बालिकाओं के लिये अपितु प्रत्येक मानव के लिये अनमोल थे जीवन के प्रत्येक स्थितियों में उपादेय थे। यज्ञ मण्डप की चारों दिशाओं में यजमान के रूप में बैठी नवस्नातिकाओं के मुखमण्डल अलौकिक आभा से उद्दीप्त हो रहे

www.thearyasamaj.org

3, 4 एवं 5 मार्च, त्रिदिवसीय कार्यक्रम में सम्मानित विशिष्ट जन

www.thearyasamaj.org

3, 4 एवं 5 मार्च, त्रिदिवसीय कार्यक्रम में सम्मानित विशिष्ट जन

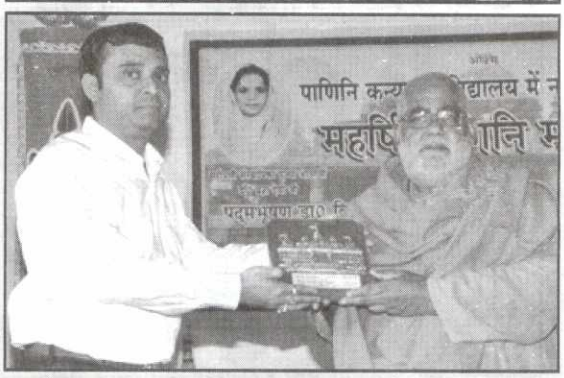

www.thearyasamaj.org

3, 4 एवं 5 मार्च, त्रिदिवसीय कार्यक्रम में सम्मानित विशिष्ट जन

www.thearyasamaj.org

3, 4 एवं 5 मार्च, त्रिदिवसीय कार्यक्रम में सम्मानित विशिष्ट जन

www.thearyasamaj.org

3 मार्च, सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करतीं ब्रह्मचारिणियाँ

www.thearyasamaj.org

४ मार्च, सायंकाल कन्याओं द्वारा प्रस्तुत शौर्य प्रदर्शन की झलकियाँ

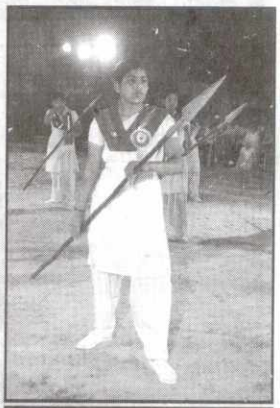
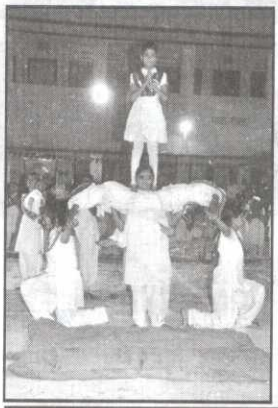
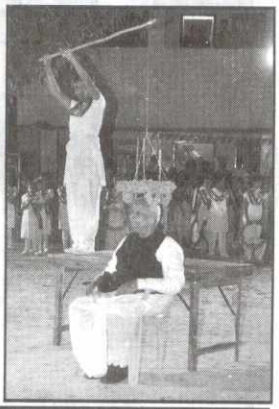

www.thearyasamaj.org

४ मार्च, सायंकाल कन्याओं द्वारा प्रस्तुत शौर्य प्रदर्शन की झलकियाँ

www.thearyasamaj.org

5 मार्च, प्रातःकाल त्रिदिवसीय कार्यक्रम के समापन समारोह का दृश्य

www.thearyasamaj.org

थे। सभी स्नातिकाओं के अभिभावक भी आर्द्रनयन उपस्थित थे। उपस्थित जन समुदाय के समक्ष आचार्या नन्दिता शास्त्री जी ने नवस्नातिकाओं का विशिष्ट परिचय भी दिया। यज्ञ के अनन्तर शिष्ट यात्रा के साथ दीक्षान्त समारोह का शुभारम्भ हुआ। शिष्ट यात्रा की मनोहारी अद्भुत छटा देखते ही बनती थी। इस शिष्ट यात्रा को अनेक धुरन्धर विद्वानों ने अलंकृत किया था कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेद-विद्या प्रतिष्ठान के सचिव आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् **डॉ. रूपकिशोर शास्त्री** (उज्जैन), राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् **डॉ. सुद्युम्नाचार्य जी** (सतना) आर्य परिव्राजक **स्वामी ऋतस्पति जी**, **साध्वी निर्मला योगभारती** जी (हैदराबाद), **सुश्री सूर्या देवी चतुर्वेदा** और इनके साथ विद्यालय की वेदविदुषी **आचार्या नन्दिता शास्त्री**, उपाचार्या **डॉ. प्रीति विमर्शिनी** जिनकी छत्रछाया में ही विद्याभ्यास रूपी तपश्चर्या में निरत रहते हुए इन कन्याओं ने इस साधना स्थली में जीवन के अनमोल 12-13 वर्ष व्यतीत करते हुए सम्पूर्ण व्याकरण के ग्रन्थों प्रथमावृत्ति, काशिका, महाभाष्य तथा निरुक्त, दर्शनादि का गूढ़ अध्ययन एवं संगीत वाद्य आदि कलाओं का ज्ञान प्राप्त किया था। इन सबके आशीर्वाद की शीतल शान्त छाया के साथ "**योऽपां पुष्पं वेद**" आदि तैत्तिरीय ऋचाओं की मङ्गलध्वनि अनुगूंज के मध्य पीतगणवेश में सुसज्जित सभी कुलवासिनी लघु बालाओं के द्वारा पुष्पवृष्टि के द्वारा मङ्गल कामनाओं को स्वीकार करते हुए शस्त्र सुसज्जित मार्ग से आँखों में आँसू लिये हुए ये नवस्नातिकायें प्रेम-सत्कार व आशीर्वाद से अभिभूत पाणिनि सभागार में प्रविष्ट हुईं तो उपस्थित जन समुदाय ने भी खड़े होकर पुष्पवृष्टि एवं करतल ध्वनि से इनका स्वागत किया और ये सभी मञ्च पर समासीन हुईं। सभी कन्याओं का मुखमण्डल विभिन्न मिश्रित भावों को लिये हुए देदीप्यमान हो रहा था।

परम्परा के अनुरूप कुलगीत के पश्चात् दीक्षान्त का प्रतिज्ञावाचन **आचार्या नन्दिता शास्त्री** जी ने कराया उसके पश्चात् सभी 12 स्नातिकाओं को व्याकरण वेदरत्न की उपाधि प्रदान की गई। दो कन्याओं को व्याकरणोत्तमा की उपाधि प्रदान की गई। इसके साथ ही संगीतादि विषयों में निपुण स्नातिकाओं को संगीत रत्न की उपाधि से भी सुभूषित किया गया। उपाधि ग्रहण करने वाली दीक्षित कन्यायें थीं– प्रियङ्का, प्रतिभा, संगीता (बिहार), सञ्जीवनी, प्रतिष्ठा, महिमा, प्रियंवदा, धर्मवती, ज्योति, (उत्तर प्रदेश), सरला, टी. जाह्नवी, कस्तूरी एवं सौजन्या (हैदराबाद) आज के इस भव्य समारोह के कुशल गरिमापूर्ण सञ्चालक आर्यरत्न श्री वाचोनिधि जी आर्य के निवेदन पर सभी नवस्नातिकाओं ने अपने मार्मिक किन्तु दृढ़ आत्मनिवेदन से सभी को भावविभोर कर दिया उस मार्मिक वातावरण में उनके भावों को सुनकर उपस्थित जन समुदाय अपने आँसू न रोक सका। दीक्षित बालिकाओं ने गुरुकुलीय जीवन के अनुभव सुनाकर रुलाया भी हँसाया भी। सभी ने दृढ़

www.thearyasamaj.org

निष्ठापूर्वक ऋषि के मिशन को आगे बढ़ाने का तथा अपनी कुलभूमि विद्याभूमि से हमेशा जुड़े रहने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि **डॉ. रूपकिशोर शास्त्री** ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि– जिस नगरी में कभी महर्षि दयानन्द ने शास्त्रार्थ के लिये ललकारा था काशी के पण्डितों को आज वहीं उनके सपने इस पाणिनि कन्या महाविद्यालय में साकार हो रहे हैं। कन्यायें वेदाध्ययन कर मिथक तोड़ रही हैं, वेद एक अमृत कलश है जहाँ इसकी एक बूँद छलकती है वहीं ज्ञान का महाकुम्भ होता है। इस प्रकार वेद विश्व की धरोहर है और वह मातृशक्ति की गोद में ही सुरक्षित है। अतः नवस्नातिकाओं को आगे बढ़ने व कभी कर्त्तव्य विमुख न होने की प्रेरणा एवं अनन्त आशीर्वाद प्रदान करते हुए अपने ओजस्वी वक्तव्य का समापन किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पोलैण्ड के **डॉ. योगानन्द शास्त्री** ने भी विद्यालयीय क्रिया कलापों की प्रशंसा की और कहा कि यदि हम चैतन्य न हुए तो आधुनिकता का छलावा हमारे संस्कार और संस्कृति को निगल जायेगा, भारतीय विदेशी सभ्यता का अन्धाधुन्ध अनुकरण कर रहे हैं जबकि विदेशी भारतीय ज्ञान, संस्कृति और संस्कार को श्रद्धा से ग्रहण कर रहे हैं।

इसके बाद **आचार्या नन्दिता शास्त्री** जी ने अपने दीक्षान्त उद्‌बोधन में प्रिय स्नातिकाओं को स्वाध्याय रूपी परम तप से कभी विमुख नहीं होना भीड़ में मत खोना तुम्हें अपनी पहचान अलग बनानी है तुम सब ऋषि दयानन्द की ऋणी हो इस कुलभूमि की ऋणी हो क्योंकि आज तुम जो कुछ भी हो इन्हीं की कृपा से हो इस लिये तुम्हें इन दोनों से हमेशा जुड़े रहना है वैदिक धर्म तुम्हारा प्राण हो तुम्हारा रोम-2 वेद से अनुप्राणित हो। आत्मानुशासन की लगाम से हमेशा अपने को संरक्षित रखना तथा **प्रजातन्तुं मा व्यवच्छैत्सीः** अर्थात् इस आर्ष पाठविधि की परम्परा को आगे बढ़ाते रहना। जीवन के किसी भी क्षेत्र में रहो राष्ट्र समाज एवं विद्यालय के प्रति अपने कर्त्तव्य को हमेशा याद रखना तुम्हें जीवन में खूब यश प्राप्त हो। आदि अनेक आदेशात्मक आशीर्वाद प्रदान किये। वेदरत्न उपाधि प्राप्त प्रियंका एवं प्रतिभा के पिता जी ने भावपूर्ण कविता पढ़कर आचार्या जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। अनन्तर अध्यक्षीय आशीर्वादात्मक उद्‌बोधन, सभी स्नातिकाओं के अभिभावकों के सम्मान के साथ दीक्षान्त समारोह सम्पन्न हुआ। आज के कार्यक्रम की अध्यक्षता **डा. सुद्युम्नाचार्य जी** (सतना) ने की।

द्वितीय दिवस 4 मार्च रात्रिकालीन सभा शौर्यपूर्ण प्रदर्शन के लिये आयोजित की गई थी, लगभग तीन घण्टों तक ब्रह्मचारिणियों ने अपनी शौर्यपूर्ण प्रस्तुति से लोगों को दाँतों तले अंगुलि दबाने को विवश कर दिया। जब एक साथ श्वेत गणवेश में सैन्य प्रदर्शन परेड हेतु कन्यायें पंक्तिबद्ध उपस्थित हुईं उस समय प्रतीत होता था जैसे एक साथ देवबालायें आकाश से धरती पर उतर आई हों सूर्य सी तेजस्विता, बिजली सी चपलता से इन वीराङ्गनाओं ने एक के बाद एक बिना थके लाठी,

www.thearyasamaj.org

भाला, तलवार आदि के शौर्यपूर्ण प्रदर्शन के साथ ही पी.टी लेजियम डम्बल्स आदि की सांगीतिक प्रस्तुति तथा बृहत् स्तूप निर्माण तथा तीरन्दाजी की अनेक क्रियाओं की आश्चर्यजनक प्रस्तुति ब्रह्मचारिणी धर्मवती ने की पाणिनि कन्या महाविद्यालय में समागत अतिथिवृन्दों का स्वागत शौर्यपूर्ण वीरोचीत अन्दाज में सरगम के साथ स्वागतम् शुभागमनम् का पट्ट लिये ब्रह्मचारिणियों ने किया तो दर्शक रोमांचित हो गये। शौर्यपूर्ण कार्यक्रमों का समापन '**हे धर्मवीर आर्यो हे विश्व के आचार्यो हे वेद के पुजारियों आगे बढ़ों**' इस सैन्य गीत से हुआ। सम्पूर्ण शौर्यपूर्ण कार्यक्रमों का प्रशिक्षण निर्देशन विद्यालयीय स्नातिका **ब्र. ज्योति, प्रियंवदा** एवं **सरला वेदरत्न** ने किया था तथा आज के कार्यक्रम का कुशल ओजपूर्ण संचालन **प्रियंका वेदरत्न** ने किया।

आज के कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुम्बई से पधारे आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान **श्री मिठाईलाल जी** कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वाशी आर्य समाज मुम्बई के प्रधान **डा. तुलसीराम जी बांगिया** विशिष्ट अतिथि **श्री अरुण एब्रोल** सभी ने जो विद्यालय के सभी कार्यक्रमों को अपने अनुभव पूर्ण नेत्रों से देख रहे थे भूरि-भूरि प्रशंसा की। अपने प्रभावशाली विचार अपनी संस्था के विषय में रखे तथा संस्था को सुदृढ़ बनाने का स्वयं संकल्प लिया। उपस्थित जनता से भी एतदर्थ सहयोग हेतु आह्वान किया। साथ ही आचार्या नन्दिता शास्त्री जी को मुम्बई में सम्मानार्थ आमन्त्रित किया।

5 मार्च प्रातःकाल महीयसी संस्थापिका आचार्या **डॉ. प्रज्ञा देवी जी** के 75वें हीरक जयन्ती वर्ष सम्पूर्त्ति पर उनके तप-त्याग-समर्पण की साक्षी ऐतिहासिक यज्ञशाला में सभी श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से यजुर्वेद के 40वें अध्याय से विशेष आहुति देकर महायज्ञ को सम्पन्न किया। सभी ने आचार्या जी की चहुँमुखी चिन्तन धारा, निर्माण के प्रति सजगता, तत्परता, सिद्धान्तनिष्ठा को स्मरण किया। यज्ञ के अन्त में आचार्या जी के भ्राता **डा. सुद्युम्नाचार्य जी** ने आचार्या जी का स्मरण करते हुए कहा कि– आचार्या जी ने अपने जीवन को वेद मन्त्रों से अलंकृत किया था। हमें उनके जीवन से कर्म की प्रेरणा लेकर संकल्पशील बनना चाहिए।

इस अवसर पर समापन समारोह के मुख्य अतिथि सम्माननीय **कलराज मिश्र** ने मञ्च से अपने उद्गार व्यक्त किये कि– भारतीय संस्कृति में गुरुकुल की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। देश में हावी होती पाश्चात्य संस्कृति ने इस परम्परा को प्रभावित किया है। आज आवश्यकता है इसे सहेजने संवारने की। आचरण, व्यवहार, एकता और संस्कार सब संस्कृत में समाहित हैं। संस्कृत विश्व को आपस में जोड़ती है। संस्कृत में ही संस्कृति का वास है आज के ऊहापोह के दौर में लोगों को प्रेरित करने में संस्कृत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यहाँ की कन्यायें शास्त्र के साथ-साथ शस्त्र पर भी समान अधिकार रखती हैं यह नारी सशक्तीकरण का प्रबल उदाहरण है।

इस अवसर पर पू. आचार्या **डॉ. प्रज्ञा देवी** जी

www.thearyasamaj.org

द्वारा लिखित '**उरुधारा नारी**' पुस्तक का विमोचन भी मुख्य अतिथि के हाथों सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि **डॉ. मुमुक्षु आर्य**, नोएडा ने कहा कि– लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति ने गुरुकुल परम्परा को समाप्त किया है। पाणिनि कन्या महाविद्यालय ने उस परम्परा को काशी में पुनर्जीवित कर मिसाल कायम किया है। इस अवसर पर **डॉ. रमामित्र शास्त्री** (पूर्व प्राचार्य गुरुकुल सिराथू), **श्रीमती शन्नो देवी** (भुवनेश्वर) आदि ने भी श्रद्धासुमन अर्पित किये। कार्यक्रम में छोटे-छोटे बच्चों द्वारा ऋग्वेद का सस्वर घनपाठ, सूत्रों की अन्त्याक्षरी, संस्कृत सम्भाषण, संस्कृत गीत आदि बौद्धिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति भी सबके द्वारा सराही गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता **साध्वी निर्मला योगभारती** ने की। आचार्या नन्दिता शास्त्री व उपाचार्या डॉ. प्रीति विमर्शिनी, विद्यालय के सम्मानित सदस्य श्री देव भट्टाचार्य, डा. ब्रह्मानन्द चतुर्वेदी ने सभी विशिष्ट जनों को कार्यक्रम के अन्त में स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

समारोह के अन्त में उपस्थित अतिथिवृन्द तथा जो किन्हीं कारणों से समारोह में सशरीर उपस्थित नहीं हो सके थे। उन सबका धन्यवाद किया। जिसमें सर्वप्रथम श्रद्धेय **श्री आचार्य बालकृष्ण जी**, आप का शुभागमन 5 मार्च को होना था हम सब प्रतीक्षा कर ही रहे थे कि ज्ञात हुआ किन्हीं अपरिहार्य कारणों से आपके दर्शन से उपस्थित जनसमुदाय वञ्चित ही रहेगा। अस्तु! आपने आगामी कार्यक्रम में आने का आश्वासन दिया तथा इतने बड़े महोत्सव हेतु अपने ट्रस्ट से उत्तम राशि भेजकर कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया। सम्मान्य भ्राता **श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल** अहमदाबाद, पू. **माता कौशल्या देवी-आनन्द स्वरूप आर्य** गाजियाबाद, (संरक्षक सदस्य) **श्री दर्शन अग्निहोत्री** नई दिल्ली (100 कुर्सियाँ), **श्री प्रेम प्रकाश जी आर्य** राँची बिहार। (50 कुर्सियाँ एवं दरवाजों हेतु) **श्रीमती सविता अग्रवाल** (सम्पूर्ण सभागार हेतु हरे मैट) आदि सभी के प्रति आभार प्रकट किया। इसी क्रम में आचार्या जी ने भवन निर्माण में एक छोटी सी कील के महत्त्व की उपयोगिता को जिस प्रकार उपेक्षित नहीं किया जा सकता उसी प्रकार सम्पूर्ण महोत्सव की सफलता के लिये विद्यालय के छोटे बड़े सभी सदस्य तथा विद्यालयीय बालिकाओं को भी जिन्होंने अपनी कर्त्तव्य निष्ठा एवं निपुणता का परिचय दिया सभी को यथायोग्य धन्यवाद, सम्मान तथा आशीर्वाद प्रदान कर कार्यक्रम के समाप्ति की घोषणा की शान्तिपाठ एवं जयघोष के साथ बड़े ही शान्तिपूर्वक सौहार्दपूर्ण वातावरण में सभी कार्यक्रम सम्पन्न हुए। सभी कार्यक्रमों में कन्याओं के अभिभावक व नगर के विशिष्ट जनों की उपस्थिति उत्साहपूर्ण थी जिनमें विद्यालय के अभिन्न सदस्य **श्री विनीत भारतीया** (वाराणसी), **श्री चिरञ्जीव मुखर्जी** ' डिप्टी एस.पी. (गोरखपुर), **आचार्य धनञ्जय कुमार शास्त्री** (गुरुकुल पौन्धा, देहरादून), **श्री दीनानाथ झुनझुनवाला**, **श्री अशोक गुप्ता**, **डा. उर्मिला शर्मा**, **डॉ. स्वरवन्दना शर्मा**, **श्रीमती ललिता झुनझुनवाला**, **श्रीमती मोनिका सिंह** (इनरव्हील क्लब वाराणसी), **श्री संजीव अग्रवाल** एवं **श्री**

www.thearyasamaj.org

श्यामधर तिवारी (वाराणसी) **श्रीमती कुसुम अग्रवाल**, **श्रीमती रेखा रस्तोगी**, संयोजक प्रमुख डा. नन्दनम् सत्यम् जी का विस्तृत परिवार उल्लेखनीय है। इस अवसर पर मन्दिर निर्माण में विशिष्ट सहयोगी– आर्य समाज कांकरिया अहमदाबाद के प्रतिनिधि **श्री पूनमचन्द नागर**, आर्य समाज गांधीधाम के प्रतिनिधि **श्री वाचोनिधि आर्य**, **श्रीमती सुनीता जायसवाल** (कलकत्ता) **डॉ. दयालशंकर शर्मा** (भरतपुर), **श्री रमामित्र शास्त्री** (इलाहाबाद), **श्रीमती राज मल्होत्रा** (नई दिल्ली), **श्री दर्शन कुमार चड्ढा** (फरीदाबाद), **श्री राम माहेश्वरी**, **श्रीमती अरुणा रमण**, **श्री अशोक गुप्ता**, **श्री अशोक अग्रवाल** चायवाले, **श्रीमती प्रेमा अग्रवाल**, (वाराणसी) आदि का सम्मान कार्यक्रम भी यथावसर चलता रहा।

नाना प्रकार की विभिन्नताओं को अपने नयनों में समेटे, ज्ञानवर्धक प्रेरणाप्रद शिक्षाओं को, अनुभवों को हर्षप्रदायक क्षणों को, मधुर स्मृतियों को हृदयों में संजोकर भावपूर्ण हृदय से आश्रम का प्रसाद ग्रहण कर परमेश्वर का अतिशय धन्यवाद ज्ञापन करते हुए सभी विदा हुए।

पाठकवृन्द!

यह वार्षिकोत्सव हमारे लिये सचमुच एक बहुत बड़ी चुनौती थी पू. आचार्या जी के अभाव में इस प्रकार का बृहद् आयोजन प्रथम बार था। पुनरपि कार्यक्रमों की गुणवत्ता, विद्यालय की प्रतिष्ठा, अतिथियों के आवास, भोजनादि की समुचित व्यवस्था, विद्यालयीय ब्रह्मचारिणियों का अनुशासन सभी कार्यों के प्रति सजगता, कर्मठता के साथ-2 कार्यक्रमों की विविधता बालिकाओं की सर्वविध निपुणता आदि सभी कार्यक्रम प्रारम्भ से लेकर समाप्ति पर्यन्त चर्चा के विषय बने रहे। जिन लोगों ने पूज्या आचार्या जी के निर्देशन में वार्षिकोत्सव देखे थे उन सभी ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की तथा वार्षिकोत्सव की गुणवत्ता में किसी भी प्रकार की यत्किञ्चित् भी न्यूनता न होने की बात कही इतना ही नहीं अपितु सभी ने और श्रेष्ठ ही बताया। **आचार्या नन्दिता शास्त्री** जी का सम्पूर्ण समारोह में ओजपूर्ण किन्तु विनम्र शैली में कुशल संचालन, कुशल प्रबन्धन देखकर लोग कह उठे अरे! इनमें तो पूज्या आचार्या डॉ. प्रज्ञा देवी जी ही प्रतिभासित हो रही हैं। सचमुच वाक्कला हो, लेखन कला हो, अध्यापन हो, ललित कला हो, पाक कला हो, नेतृत्व क्षमता या त्वरित निर्णय लेने की क्षमता हो सब कुछ तो आपके अन्दर विद्यमान है। पूज्या आचार्या **पं. मेधा देवी** जी के प्रयाण के पश्चात् हम सब आपको देखते रह गये विषाद के क्षणों में आप न तो विचलित हुईं और न ही मन्दिर के उद्घाटन जैसे हर्षदायक क्षणों में आपने अपनी गम्भीरता का ही परित्याग किया। परिणामस्वरूप विद्यालय निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर है और होता रहेगा। परमपिता परमेश्वर आपको स्वस्थ दीर्घजीवन प्रदान करे साथ ही हमें आप सबका निःस्वार्थ निश्छल प्रेम और आशीर्वाद मिलता रहे यही हमारी आप सबसे अपेक्षा है।

●

www.thearyasamaj.org

भाग्य और पुरुषार्थ

गतांक से आगे –

– आचार्य हरिहर पाण्डेय

भाग्य के भावी, दैव, हरि-इच्छा, ब्रह्म-लेख, अदृष्ट, अपूर्व, संचित आदि अनेक नाम हैं। हमारे यहाँ बड़े-बड़े ज्ञानियों की भी दृढ़ प्रतीति है कि विधाता ने छठी रात के अन्त में ललाट में जो लिख दिया है वह किसी भी उपाय से न राई भर घट सकता है न तिल भर बढ़ सकता है। '**होइहै सोइ जो राम रचि राखा**' किन्तु यह सिद्धान्त यदि ध्रुव सत्य होता तो हमें खेती में घोर श्रम और बहुत व्यय न करना पड़ता। नियत तिथि पर वर-वधू अपने आप मिल जाते। विद्याभ्यास, व्यापार आदि सैकड़ों कर्मों में व्यस्त और चिन्तित न रहना पड़ता, पुत्र-प्राप्ति के लिए हरिवंशपुराण न सुनना पड़ता, पाप-नाश के लिए तीर्थ-यात्राएँ न करनी पड़तीं, वैद्य की औषध का सेवन न करना पड़ता और युद्ध में स्वजनों की बलि न देनी पड़ती। हम एक युवती विधवा को आश्वासन देते हैं कि तुम्हारे भाग्य में यही लिखा था परन्तु भारत की ही अनेक जातियों में विधवा विवाह धर्मसम्मत है और विश्व की कई जातियों में विधवा एवं विधुर शब्द ही समाप्त हो गये हैं। वैधव्य का स्थायित्व विधि का विधान होता तो विधुर का भी दूसरा विवाह नहीं होता और कोई पुरुष सैकड़ों-सहस्त्रों नारियों का पति न बन पाता। भाग्य का परिवर्तन आज हम हर क्षेत्र में देख रहे हैं। पहले बद्रीनारायण का दर्शन कुछ भाग्यशालियों को ही होता था और उनमें से थोड़े ही लौट कर आते थे पर आज चारों धाम की यात्रा दो एक दिन में शक्य है। पहले ब्रह्मा जी स्त्रियों और शूद्रों के भाग्य में विद्या नहीं लिखते थे पर अब हम उनसे लिखवाने लगे हैं और ब्रह्मा अनेक नारियों को मुख्यमंत्री और राष्ट्रपति आदि बनाने लगे हैं। ज्योतिषी जी ने रामधनी सिंह की जन्मपत्री में पाँच पुत्र और पाँच पुत्री का प्रबल योग लिखा था पर अब उन्होंने दो सन्तान के बाद आप्रेशन कराकर ब्रह्म-लेख को मिटा दिया है। वैद्यराज दुर्गादत्त जी बीस वर्षों से मोतियाबिन्द के कारण अन्धे थे और उसे विधि का विधान मानते थे पर उनके सुपुत्र डॉक्टर ने उनके नेत्र ठीक कर दिये हैं। सेवाराम जी 15 वर्षों से विवृद्ध अण्डकोष को गले में बाँधे घूमते थे पर अब वह अदृश्य है और वे दौड़ रहे हैं। बड़ी माता (चेचक), प्लेग, महामारी आदि अनेक रोग अब अदृश्य हो गये हैं और बिजली तथा नहर ने ऊसर के भाग्य को परिवर्तित कर दिया है। किसी देश में मनुष्य की मध्यम आयु 25 वर्ष है तो कहीं 75 वर्ष किन्तु दोनों के ब्रह्मा एक हैं। प्रत्यक्ष देखा जा रहा है कि ज्ञान और पुरुषार्थ की वृद्धि में भाग्य की सीमा संकुचित होने लगती है, उनके पूर्णत्व में समाप्त हो जाती है और इस जनम के भले बुरे कर्मों द्वारा पीछे के पाप-पुण्य समाप्त किये जा सकते हैं।

हमारे दर्शनशास्त्र में त्रैत, द्वैत और अद्वैत तीन मुख्य वाद हैं। त्रैतवाद के अनुसार ईश्वर के साथ-साथ प्रकृति और जीव भी कर्म करते हैं तथा इन तीनों की कृतियाँ प्रत्यक्ष हैं। ईश्वर और जीव को मानने वाले द्वैतवाद में भी जीव कर्मठ हैं तथा अद्वैतवाद तो जीव को ईश्वर मानता है। अतः दर्शनों के मत में जीव भाग्य

www.thearyasamaj.org

का दास नहीं बल्कि उसका निर्माता है, विधाता है।

भाग्य और योगवासिष्ठ

इस ग्रन्थ में महामुनि वसिष्ठ द्वारा राम को दिये हुए उपदेशों का संग्रह है और इसके लेखक महर्षि वाल्मीकि हैं। इसके मुमुक्षुप्रकरण के चतुर्थ से नवम पर्यन्त, छः सर्गों में दैव का विस्तृत और सयुक्तिक विवेचन है। उसमें से यहाँ केवल 40 श्लोक लिखे हैं। हिन्दी अनुवाद श्री श्रीकृष्णपन्त शास्त्री जी का है। इसमें एक शब्द भी मेरा नहीं है।

सर्वमेवेह संसारे सर्वदा रघुनन्दन।
सम्यक् प्रयुक्तात् सर्वेण पौरुषात् समवाप्यते।4।8
पौरुषं स्पन्दफलवत् दृष्टं प्रत्यक्षतो न यत्।
कल्पितं मोहितैर्मन्दैः दैवं किंचिन्न विद्यते।4।10

हे रघुनन्दन! इस संसार में भली भाँति किये गये प्रयत्न से सबको सर्वदा सब पदार्थ मिलते हैं। प्रयत्न का अभाव ही विफलता का हेतु है। प्राचीनकाल के मुनियों को जो फल मिलते थे वे आज आधुनिक पुरुषों को नहीं मिल सकते, यह सोचना अज्ञान है। भोजन से उत्पन्न तृप्ति की भाँति पुरुषार्थ का फल प्रत्यक्ष है और दैव (भाग्य) अप्रत्यक्ष है। वह वस्तुतः अज्ञान से मोहित मन्द पुरुषों की कोरी कल्पना है।

साधूपदिष्टमार्गेण यन्मनोऽविचेष्टितम्।
तत्पौरुषं तत्सफलं अन्यदुन्मत्तचेष्टितम्।4।11
यो यमर्थं प्रार्थयते तदर्थं चेहते क्रमात्।
अवश्यं स तमाप्नोति न चेदर्धान्निवर्तते।4।12

साधुओं के कहे मार्ग से मन और अंगों की चेष्टा पौरुष है, वह सफल होता है और शेष उन्मत्त की चेष्टा है। जो जिस अर्थ को चाहता है और प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता रहता है वह उसको क्रमशः अवश्य प्राप्त करता है, यदि आधे पर छोड़ न दे तो।

प्राक्तनं चैहिकं चेति द्विविधं विद्धि पौरुषम्।
प्राक्तनोऽद्यतनेनाशु पुरुषार्थेन जीयते।4।17
यत्नवद्भिः दृढाभ्यासैः प्रज्ञोत्साहसमन्वितैः।
मेरवोपि निगीर्यन्ते कैव प्राक्पौरुषे कथा।4।18

पौरुष दो हैं। एक पूर्वजन्म का और दूसरा इस जन्म का। आधुनिक पुरुषार्थ द्वारा पूर्वजन्म का पुरुषार्थ शीघ्र तिरस्कार को प्राप्त होता है। निरन्तर प्रयत्न करने वाले दृढ़ाभ्यासी, प्रज्ञा और उत्साह से युत पुरुष मेरु पर्वत को भी मटियामेट कर डालते हैं, पूर्व पौरुष की तो बात ही क्या है।

परं पौरुषमाश्रित्य दन्तैर्दन्तान् विचूर्णयन्।
शुभेनाशुभमुद्युक्तं प्राक्तनं पौरुषं जयेत्।5।9
प्राक्तनः पुरुषार्थोसौ मां नियोजयतीति धीः।
बलादधस्पदीकार्या प्रत्यक्षादधिका न सा।5।10

उत्कृष्ट पौरुष का अवलम्बन कर दाँतों से दाँत पीसकर इस जन्म के शुभ पौरुष से पूर्वजन्म के अशुभ को जीत लेना चाहिए। प्राचीन कर्म मुझे प्रेरित कर रहा है, इस बुद्धि को कुचल डालना चाहिए। प्राक्तन कर्म प्रत्यक्ष से बलवान् नहीं है।

दोषं शाम्यत्यसन्देहं प्राक्तनोद्यतनैर्गुणैः।
दृष्टान्तो ह्यस्तनस्यात्र दोषस्याद्यगुणैः क्षयः।5।12
न गन्तव्यमनुद्योगैः साम्यं पुरुषगर्दभैः।
उद्योगस्तु यथाशास्त्रं लोकद्वितयसिद्धये।5।14

इस जन्म के गुणों से पूर्व जन्म का दोष निसन्देह नष्ट हो जाता है (जैसे उपवास से अजीर्ण) अनुद्योगी गदहे से भी निकृष्ट हैं। शास्त्रानुसार उद्योग से इस लोक और परलोक दोनों में सिद्धि मिलती है। ●

(क्रमशः)

www.thearyasamaj.org

दैनिक जागरण, वाराणसी ५ मार्च २०१३

कन्या गुरुकुल की माटी जो बनाती इस्पात

– प्रमोद यादव

वाराणसी। काशी में इन दिनों धूम है शिवरात्रि महोत्सव की और इस मौके पर अगर शिव की प्राणपुंज 'शक्ति' का स्मरण न हो तो शिव तो अधूरे ही रह जाएंगे। इसी चर्चा को विस्तार दें तो मस्तिष्क में कौंध जाते हैं वह नाम और चरित्र जो धूप-दीप-नैवेद्य से नहीं, अपने कठिन प्रयासों से शिव के अर्धनारीश्वर रूप के वामपक्ष के शक्ति संधान में एकलव्य की तरह तल्लीन हैं।

काशी में जब भी नारी सशक्तीकरण के प्रकल्पों की बात होगी पाणिनि कन्या महाविद्यालय का नाम अग्रणी पंक्ति से उभरकर सामने आएगा। सच कहें तो नारी के अबला होने का दाग मिटाती है इस गुरुकुल की माटी। ध्येय वाक्य '**शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चर्चा प्रवर्तते**' को सही अर्थ बताती और बालिकाओं को इस्पात बनाती। ऐसी पाठशाला जहाँ हर जुबान पर अष्टाध्यायी वेद पुराण और हाथों में बरछी-भाला। मन ही नहीं तन से भी सबल और मजबूत राष्ट्र का सम्बल। हम बात कर रहे हैं। जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय की ऐसे ही इस्पाती इरादों की आभा से दपदप करता समूचा परिसर।

नारी सशक्तीकरण
पाणिनि कन्या महाविद्यालय
'हर ओर वेद ऋचाओं की पवित्र सुवास और जुबान पर साक्षात् सरस्वती का वास, तलवार-भाले पर हस्त कौशल दिखातीं, आँखें बाँधे सधे बाण चलातीं, मनु-गार्गी तो झाँसी की रानी के भी दर्शन करातीं यहाँ की छात्राएं।'

हर ओर वेद ऋचाओं की पवित्र सुवास और जुबान पर साक्षात् सरस्वती का वास। तलवार-भाले पर हस्त कौशल दिखाती आँखें बाँधे सधे बाण चलातीं। मनु-गार्गी तो झाँसी की रानी के भी दर्शन करातीं। इस तपः स्थली को मध्य प्रदेश से आयी दो विदुषियाँ **डॉ. प्रज्ञा देवी** व **मेधा देवी जी** ने अपनी संकल्पनाओं से सींचा। छह दशक पहले पिता के सपनों को पूरा करने के ध्येय से दोनों बहनें क्रमशः 18 व 7 वर्ष की अवस्था में संस्कृत अध्ययन करने माँ के साथ काशी आयीं। गुरु पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के चरणों में बैठकर वेद-वेदांग, अष्टाध्यायी महाभाष्य, निरुक्त-दर्शन आदि में निपुण हुईं और विदुषियों की श्रृंखला में एक कड़ी और जुड़ गई।

गुरु की आज्ञा और गुरु दक्षिणा स्वरूप 'अपने जैसे दस और तैयार करो।' इन संकल्पों के साथ मोतीझील में कन्याओं को विद्यादान शुरू किया। वर्ष 1971 में इसे तुलसीपुर में महाविद्यालय का रूप दिया। **उद्देश्य–** प्राचीन आर्ष गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित कर कन्याओं को वेद वेदांग, अष्टाध्यायी महाभाष्य, निरुक्त, दर्शनादि ग्रन्थों की उत्तम विदुषी बनाना। प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति के प्रति श्रद्धावान् बनाने के साथ आधुनिक शिक्षा और शस्त्र प्रशिक्षण से सबल व स्वावलम्बी भी बनाना। इसके लिए नौ वर्ष तक की बालिकाओं को 13 वर्ष तक

www.thearyasamaj.org

कड़ा शिक्षण-प्रशिक्षण। दक्षिणा का स्वरूप वही अग्रशिष्य प्रणाली के तहत खुद पढ़ो और अपने से छोटों को पढ़ाओ। बालिकाओं ने मिथक तोड़े और भारतीय वैदिक संस्कृति का डंका देश ही नहीं, विदेशों में भी बजाया। ये किशोरियाँ और तरुणियाँ शिक्षण प्रवचन के साथ ही विवाह-यज्ञोपवीत समेत 16 संस्कार भी करा रही हैं। इसमें से कई अलग-अलग स्थानों पर गुरुकुल भी चला रही हैं।

आचार्या डॉ. नन्दिता शास्त्री कहती हैं, पूज्या आचार्या के संकल्पों को पाणिनि मन्दिरम् के रूप में मूर्त रूप दे दिया गया। अन्तर्राष्ट्रीय महिला छात्रावास पूर्णता की ओर है। इस समय यहाँ 80 छात्राएं यहाँ हो रही है संस्कारित। ये छात्राएं आगे चलकर भविष्य में हिन्दू धर्म ध्वजा वाहक का कार्य करेंगी। समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के साथ ही भारतीय परम्परागत संस्कारों का समावेश करेंगी।

सोने सी तप कर निखरीं मेधाएँ

दीक्षान्त समारोह

व्याकरण वेद व संगीत विद्या में निपुण 14 कन्याओं को मिली डिग्री

वाराणसी। पाणिनि कन्या महाविद्यालय में सोमवार को शास्त्र और शस्त्र-सुर संधान में निपुण 14 बालिकाओं को डिग्री दी गई। वेद व्याकरण और संगीत के ज्ञान में तप कर निखरी विदुषियों का समावर्तन संस्कार किया गया। राष्ट्र निर्माण और संस्कृति संस्कार के प्रसार की प्रतिज्ञा भी कराई गई।

मौका था अनूठे गुरुकुल के नौवें दीक्षान्त समारोह का। बतौर मुख्य अतिथि महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के सचिव **प्रो. रूपकिशोर शास्त्री** ने डिग्रियों का वितरण किया। कहा कि जिस नगरी में महर्षि दयानन्द ने शास्त्रार्थ के लिए ललकारा आज वहाँ ही उनके सपने साकार हो रहे हैं। बालिकाएँ वेद अध्ययन कर मिथक तोड़ रही हैं। वेद विश्व की धरोहर है और वह मातृशक्ति की गोद में ही सुरक्षित है। विशिष्ट अतिथि पोलैण्ड के **योगानन्द शास्त्री** ने कहा कि चैतन्य न हुए तो आधुनिकता का छलावा संस्कार और संस्कृति को निगल जाएगा। आचार्या डॉ. नन्दिता शास्त्री ने समावर्तन संस्कार व प्रतिज्ञा वाचन कराया। दीक्षित बालिकाओं ने गुरुकुल जीवन के अनुभव सुनाकर लोगों को विभोर किया। डॉ. प्रियव्रत दास, स्वामी ऋतस्पति, साध्वी निर्मला योगभारती आदि ने भी विचार व्यक्त किए। अध्यक्षता डॉ. सुद्युम्नाचार्य संचालन डॉ. वाचोनिधि आर्य व धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रीति विमर्शिनी ने किया।

इन्हें मिली डिग्री : दीक्षान्त में टी. जाह्नवी को संगीत वेद व्याकरण रत्न और महिमा, धर्मवती को संगीत वेद रत्न की उपाधि दी गई। संगीता, प्रियंका, प्रतिभा, सरला, संजीवनी, ज्योति, प्रतिष्ठा, प्रियंवदा को व्याकरण वेद रत्न की डिग्री दी गई। सुलेखा को व्याकरण रत्न, कस्तूरी, सौजन्या को व्याकरण उत्तमा की उपाधि मिली।

सधे अंदाज में शस्त्र संधान। वेद निपुण बालिकाओं ने सधे अंदाज में शस्त्र संधान से लोगों को दाँतों तले अंगुलियाँ दबाने को विवश कर दिया। छात्राओं ने बिजली सी चपलता से तलवारबाजी और युद्ध कला का प्रदर्शन किया। शब्द भेदी बाण चलाए और शीशे में देखकर भी निशाना साधा।

●

www.thearyasamaj.org

राष्ट्रीय सहारा वाराणसी मंगलवार ५ मार्च २०१३

शास्त्र के साथ शस्त्र में दिखायी महारत

वाराणसी। वरिष्ठ संवाददाता

सुबह वेदपाठ से मुग्ध कर देने वाली छात्राओं की शाम को तलवारबाजी देख लोग दाँतों तले अंगुली दबाने को मजबूर हो गए। यह नजारा सोमवार को पाणिनि कन्या महाविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में दिखा।

महाविद्यालय परिसर में शौर्य का प्रदर्शन कर छात्राओं ने बताया कि वे शास्त्र में ही नहीं शस्त्र के संचालन में भी पारंगत हैं। कार्यक्रम की शुरुआत योगासन और पीटी से हुई। लयबद्ध पीटी पर कई बार तालियाँ बजीं। इसके बाद योगासनों की प्रस्तुति हुई। उन्होंने अतिथियों का स्वागत अनोखे अंदाज में किया। संतुलन साधने की कला का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने लाठियों पर खड़े होकर स्वागतम् और शुभागमनम् के बैनर लहराए।

शौर्य का प्रदर्शन करते हुए नन्हीं छात्राओं ने दोनों हाथों से तलवार भांजकर झाँसी वाली रानी की याद दिलायी। वरिष्ठ छात्राओं ने तलवार और ढाल के साथ युद्ध का प्रदर्शन किया। छात्राएँ यह संदेश देने में सफल रहीं कि वे किसी से कम नहीं हैं। शास्त्रों की रक्षा के लिए शस्त्र भी उठा सकती हैं। जिस चपलता के साथ वे तलवार भांज रही थीं, उसे देख कर यह जाहिर हो रहा था कि यह उनकी कड़ी मेहनत का नतीजा है। भाला के साथ उनके करतब देख अतिथियों की आँखें फटी रह गईं। लाठी और तीरदांजी के करतब दिखाकर छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। ●

अब गृहस्थ भी ले सकेंगी पुरोहिती की दीक्षा

रमेन्द्र सिंह : गुरुकुल पद्धति से लड़कियों को संस्कृत में शिक्षा देने के लिए मशहूर पाणिनि कन्या महाविद्यालय ने अब घरेलू महिलाओं को भी संस्कृत, संस्कार और वैदिक कर्मकाण्ड की दीक्षा देने की योजना बनाई है। महाविद्यालय इसके लिए जून के अंतिम सप्ताह से पाठ्यक्रम शुरू करने की तैयारी में है। यानी अब घरेलू महिलाएँ भी पौरोहित्य कर्म न केवल सीख सकेंगी बल्कि उसे सम्पादित भी करा सकेंगी।

पाठ्यक्रम के स्वरूप को काफी लचीला बनाया गया है। अगर कोई महिला एक महीने के प्रशिक्षण में ही दक्ष हो जाती है तो वह पाठ्यक्रम छोड़ सकती है। यदि कोई इससे अधिक अवधि तक प्रशिक्षण लेना चाहती है तो वह अपने हिसाब से समय तय कर सकती है। अधिकतम अवधि एक साल की होगी। इस दौरान वैदिक संस्कृति के सभी सोलह संस्कारों को सम्पन्न कराने की विधि, यज्ञ और हवन संपादित करने की विधि, संस्कृत लिखना और बोलना, शुद्ध उच्चारण और योग की शिक्षा दी जाएगी। गुरुकुल के नियमों के अनुसार उन्हें भी छात्रावास में रहना होगा। उनके लिए अलग से छात्रावास बन रहा है। इस छात्रावास के नियम महाविद्यालय के अन्य छात्रावासों से थोड़ा उदार होंगे। उन्हें ब्रह्मचारिणियों की तरह नहीं रहना होगा। ●

हिन्दुस्तान वाराणसी १८ अप्रैल २०१३

www.thearyasamaj.org

स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

गतांक से आगे–

– आशा रानी व्होरा

क्रान्ति का फैलाव

मंगल पाण्डे व अन्य विद्रोहियों को फाँसी देने के बाद कुछ दिन शांति रही, किन्तु यह शांति अल्पजीवी थी। मेरठ में भी 85 विद्रोही सिपाहियों ने चरबी वाले कारतूसों के प्रयोग से इन्कार किया, तो इस अपराध में उन्हें लम्बी कैद का दण्ड दिया गया। 9 मई को उन विद्रोहियों की परेड ली गयी और उन्हें बेइज्जती के साथ जेल में डाला गया। 10 मई की शाम को भारतीय सैनिकों ने खुले आम विद्रोह कर दिया। इस बारे में एक घटना दिलचस्प भी है और मार्मिक भी। 9 मई की शाम विद्रोही सैनिकों को जेल में भिजवा वफादार सैनिक जब घरों में लौटे, तो उनकी माताओं-बहनों, पत्नियों ने ही नहीं, राहगीर स्त्रियों ने भी उन पर तानाकशी की कि उन्होंने अपने भाइयों का नहीं, अंग्रेजों का साथ दिया। अगर उनमें पुरुषत्व होता, तो वे उन्हें जेल जाने से बचाते। अब भी उन्हें अपने भाइयों को छुड़ाने का प्रयत्न करना चाहिए, नहीं तो उसी रास्ते चलना चाहिए। कहते हैं, मेरठ के सैनिकों पर इसका गहरा मनोवैज्ञानिक असर पड़ा और उन्होंने क्रान्ति-तिथि तक प्रतीक्षा न कर अगले दिन 10 मई को ही विद्रोह कर दिया। इस तरह समय से पूर्व सैनिक विद्रोह द्वारा क्रान्ति की शुरुआत में मेरठ की महिलाओं का हाथ भी माना जाता है। यह अलग बात है कि क्रान्ति-विफलता के पीछे अन्य कारणों के साथ बिना पूरी तैयारी समय से पूर्व शुरुआत भी एक बड़ा कारण है पर महिलाएँ इसके प्रति बेखबर थीं। उन्होंने तो अपने पारंपरिक इतिहास को ही दुहराया था कि समय पर पीठ दिखाने वाले कायर सैनिकों की पीठ न ठोंकी जाएं, बल्कि उन्हें धिक्कार कर कर्त्तव्य की याद दिलाई जाए। इस दृष्टि से यहाँ मेरठ की उन महिलाओं की चूक नहीं, बहादुरी ही स्मरण की जाएगी।

विद्रोह की शाम सैनिकों ने जेल पर धावा बोल अपने विद्रोही साथियों को मुक्त कर लिया। यूरोपीय अधिकारियों को मार डाला। फिर बाजार लूटकर दिल्ली का रास्ता पकड़ा। दूसरे दिन वे लोग दिल्ली में थे, जहाँ दिल्ली के असंतुष्ट जन व सैनिक भी उनसे आ मिले और उन्होंने कुछ ही घंटों में दिल्ली पर अधिकार कर बहादुरशाह को भारत का सम्राट् घोषित कर दिया। इसके साथ ही विद्रोह रुहैलखण्ड और मध्य भारत में भी फैल गया। बरेली, लखनऊ, बनारस, कानपुर, झाँसी, कालपी विप्लव के केन्द्र बन गये। दिल्ली, विद्रोह का मुख्य केन्द्र था, देश भर के विद्रोही दिल्ली की ओर चल पड़े और अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह की जय-जयकार करते हुए दिल्ली में प्रवेश कर गये। वहाँ के प्रायः सभी अंग्रेज मार डाले गये। खजाने लूट लिये गये। लाल किले पर बादशाह का झंडा फिर से लहरा उठा।

www.thearyasamaj.org

अंग्रेजों की अधीनता से पस्त बूढ़ा बहादुरशाह बागियों के दिल्ली पहुँचने पर पहले एकाएक तैयार नहीं हुआ था, क्योंकि मुगल खजाने तब खाली थे और अंग्रेजों जैसी बड़ी शक्ति से लोहा लेना आसान न था। लेकिन बागियों ने कहा, ''आप तैयार हो जाइए। धन की चिन्ता न करें। अंग्रेजों के खजाने लूटकर धन हम ला देंगे।'' बेगम जीनत महल ने भी क्रान्तिकारियों का समर्थन किया और बहादुरशाह का हौसला बढ़ाया, तो वह अंग्रेजों से लड़ने के लिए तैयार हो गया। बहादुरशाह ने जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, अलवर आदि के राजाओं को पत्र लिखे कि वे अंग्रेजों के खिलाफ हथियार उठायें व उनका साथ दें। लेकिन राजपूताने के आनबान वाले राजा भी तब न जाने क्यों दूर से तमाशा देखते रहे। विद्रोह की दावाग्नि मेरठ, दिल्ली के बाद फैली बरेली, लखनऊ, बनारस, कानपुर, झाँसी में। नतीजा– सभी राजाओं के साथ न देने से चार महीने बाद दिल्ली, आठ महीने बाद लखनऊ और कानपुर फिर गुलाम हो गये।

दिल्ली में हुए विद्रोह की सूचना पाकर निकल्सन के नेतृत्व में पंजाब से बड़ी सेना भेजी गयी। लखनऊ के जान लारेंस को भी विद्रोह दबाने का आदेश दे दिया गया। दिल्ली में विद्रोहियों का नेतृत्व बहादुरशाह के दोनों लड़कों के हाथ में था। अम्बाला का विद्रोह दबा, अंग्रेज सेना दिल्ली पहुँची, तो 'बागियों' ने फाटक बन्द कर अंग्रेजों पर गोलाबारी की। अंग्रेज सैनिकों को पीछे हटना पड़ा। उन्होंने यमुना नदी के रास्ते हमले की कोशिश की पर वहाँ भी 'बागियों' की भयानक गोलाबारी का सामना उन्हें करना पड़ा। कोई चारा न देख अंत में निकल्सन ने बंद कश्मीरी दरवाजे पर लगातार गोले बरसाकर 14 सितंबर को उसे तोड़ दिया और टूटे दरवाजे से अंग्रेज सेना भीतर प्रवेश कर गयी। भीतर भी बहादुरशाह के सैनिकों से जमकर लड़ाई हुई, जिसमें सेनापति निकल्सन मारा गया। हडसन ने आकर कमान संभाली और जबरदस्त हमला किया। अब लड़ाई दिल्ली की सड़कों पर लड़ी जा रही थी। मन्दिर-मस्जिद तक देशभक्तों के खून से लाल हो गये। बहादुरशाह के दोनों लड़के व पोता हडसन के हाथों मारे गये। दिल्ली का पतन हो गया।

इसके बाद जो क्रूर दमन-कार्रवाइयाँ चली, वे रोंगटे खड़े कर देने वाली थीं। अंग्रेजों ने विद्रोहियों से जमकर बदला लिया। हजारों निरपराध व्यक्ति मौत के घाट उतार दिये गये। महिलाओं के साथ अशोभनीय व्यवहार भी हुआ। अम्बाला से दिल्ली तक के रास्ते के अनेक गाँवों को जला दिया गया। लोगों को पकड़-पकड़कर वहीं पेड़ों पर लटका फाँसी दे दी जाती, फिर लाशें वहीं लटकती छोड़ दी जातीं कि आतंक फैले। अधिक संख्या में लोगों को मारने के लिए कहीं पल्टन पूरे गाँव को चारों ओर से घेर उसमें आग लगा देती। जो बचकर भागता, उसे गोली मार दी जाती। गर्भवती स्त्रियाँ, दूध पिलाती माताएँ, बूढ़े, बच्चे किसी का भी लिहाज न था। सिवाय कुछ युवतियों के, जिन्हें वे पकड़ ले जाते। उनका भी बाद में न जाने क्या हश्र होता।

दिल्ली की खबर मिलते ही विद्रोह तेजी से उत्तर व मध्य भारत में फैल गया था। कानपुर में विद्रोहियों के नेता नाना साहब थे। उन्होंने अपने आपको पेशवा घोषित कर दिया और कानपुर में अंग्रेजों को घेर

www.thearyasamaj.org

लिया। तीन सप्ताह तक युद्ध चला। जून में जनरल नील ने इलाहाबाद के किले पर अधिकार कर लिया। फिर वह कर्नल हैवलाक के साथ कानपुर की ओर बढ़ा। इसके पूर्व ही कानपुर में अंग्रेज नाना साहब के समक्ष आत्मसमर्पण कर चुके थे। जानबख्शी पाकर वे नावों पर सवार हो इलाहाबाद के लिए निकले, परन्तु नावों में विद्रोहियों ने आग लगा दी और उन पर गोलियाँ चलायीं। बचे सैनिकों को नाना साहब ने शरण दी। फिर पीछे से अंग्रेजी फौज के आने का समाचार पा विद्रोहियों ने इन्हें भी मारकर लाशें कुओं में फेंक दीं। पर नील और हैवलाक के पहुँचने पर इस संयुक्त मोर्चे ने कानपुर पर फिर कब्जा कर लिया। नाना की पालिता बेटी मैना भी इसी दौरान जीवित जला दी गई। नाना साहब को वहाँ से भागना पड़ा। इसके बाद अंग्रेज सैनिकों ने कानपुर में बदले की कार्रवाई में बहुत जुल्म ढाये।

लखनऊ में भी विद्रोह की ज्वाला प्रचण्ड थी। हेनरी लारेंस ने कुछ समय तक लखनऊ की रक्षा की, फिर वह मारा गया और विद्रोहियों ने लखनऊ पर अधिकार कर लिया। कर्नल हैवलाक ने जनरल आउट्रम की सहायता से विद्रोहियों को रोका, किन्तु दिल्ली से वहाँ पहुँचे विद्रोहियों ने उन्हें घेर लिया। अंत में सर कैम्पवेल के नेतृत्व में एक बड़ी सेना लखनऊ जीतने के लिए भेजी गयी। कैम्पवेल ने कानपुर में तात्या टोपे का दमन किया, लौटकर लखनऊ शहर पर अधिकार करने में भी सफल हुआ। उसी ने फिर लखनऊ से बरेली जाकर वहाँ के विद्रोहियों को भी दबाया।

इस बीच 5 जुलाई 1857 को बेगम हजरत महल ने लखनऊ पर वापस कब्जा करके अपनी सेना का पुनर्गठन कर लिया था। 16 जुलाई को उन्होंने अंग्रेजों की छावनी बेलीगारद पर जोरदार हमला किया। उनके विद्रोही सैनिकों ने फैजाबाद के देशभक्त स्वातन्त्र्य सैनिक मौलवी अहमद उल्ला शाह को जेल से मुक्त कर अपना नेता बना लिया था। उन्होंने 21 सितम्बर को आलमबाग में अंग्रेजों को भारी शिकस्त दी। इसके बाद योजना थी, कलकत्ता के फोर्ट विलियम को उड़ा अवध के नवाब को वहाँ से छुड़ा लाने की, लेकिन कुछ विश्वासघातियों के कारण योजना विफल हो गयी थी और 15 फरवरी 1848 को अहमद शाह के घायल होने के बाद, बेगम हजरत महल व उनकी महिला-सेना के बहादुरी से लड़ने के बावजूद, मार्च में अंग्रेजों ने लखनऊ को वापस अपने अधिकार में ले लिया था।

मध्य भारत में विद्रोह के दो प्रमुख नेता थे– तात्या टोपे और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई। तात्या टोपे ने कालपी से चलकर कानपुर में जनरल बिन्डहैम को हराया, किन्तु कैम्पबेल ने वहाँ पहुँचकर तात्या टोपे को परास्त कर दिया था। झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई खूब बहादुरी से लड़ीं। फिर तात्या टोपे और रानी झाँसी ने अपने ठिकानों से निकलकर भी विद्रोह जारी रखा। सर ह्यूरोज ने तात्या टोपे को वेलवा के युद्ध में हरा दिया। तात्या और रानी लक्ष्मीबाई दोनों ग्वालियर की ओर बढ़े। ग्वालियर के राजा सिंधिया ने साथ न दिया, पर उसकी विद्रोही सेना की मदद से इन्होंने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। जीत के

www.thearyasamaj.org

कुछ समय बाद ही सर ह्यूरोज ने ग्वालियर पर धावा बोल दिया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई इस युद्ध में वीर-गति को प्राप्त हुईं। तात्या टोपे पकड़े गये, उन्हें फाँसी दे दी गयी। (इस बात पर खोजकर्त्ताओं ने प्रश्नचिह्न लगाया है कि जिस व्यक्ति को उस समय फाँसी दी गई वह तात्या टोपे नहीं थे)। नाना साहब नेपाल के जंगलों में भाग गये थे। उसके बाद फिर उनका कुछ पता नहीं लगा।

इस विद्रोह में बम्बई, मद्रास शामिल नहीं हुए थे। तात्या टोपे नर्मदा पार कर दक्षिण की ओर बढ़े थे, पर पूर्व तैयारी के बिना दक्षिण में विद्रोह सफल नहीं हुआ था। अम्बाला के विद्रोह को छोड़कर पंजाब ने भी क्रान्तिकारियों का साथ नहीं दिया और सिक्ख पलटनें अंग्रेजों की ओर से लड़ती रहीं। इसी तरह नेपाल का राजा भी अंग्रेजों का मित्र बन गया और गोरखा सैनिक अंग्रेजों की ओर से लड़ते रहे। पर बिहार में जगदीशपुर के 80 वर्षीय वृद्ध राजा कुंवरसिंह ने अंग्रेजों के आवागमन के रास्ते बन्द कर दिये थे। उनकी संचार-व्यवस्था नष्ट कर दी थी। वहाँ अद्वितीय छापामार युद्ध लड़ा गया, जो बाद में गुरिल्ला युद्ध के लिए एक मिसाल बना।

दक्षिण और महाराष्ट्र में पूना, सतारा, धारवाड़, बेलगाँव, हैदराबाद, मैसूर की लगभग सभी छावनियों में विद्रोह की लहर पहुँची- पर उत्तर भारत की तरह एकाएक उसका फैलाव नहीं हुआ। दक्षिण में ये विद्रोह रुक-रुककर हुए, जिसका लाभ फिरंगियों को मिला। यदि ये सारे राज्य एक साथ उठ खड़े होते, तो देश तभी आजाद हो गया होता। कोल्हापुर की पलटन ने 31 जुलाई को अंग्रेजों को मार खजाने पर कब्जा कर लिया था। इन विद्रोहियों ने तोप के मुँह पर बँधे हुए भी अपने नेताओं के नाम नहीं बताए थे। 10 अगस्त को बेलगाँव में भी विद्रोह का झंडा उठा। पूना में विद्रोही सिपाहियों ने मराठा राज्य घोषित करने व नाना साहब को पेशवा बनाने की योजना बना ली थी। इस योजना का भेद खुल गया और निश्चित दिन से पहले ही गिरफ्तारियाँ हो गयीं। विद्रोही नेता फाँसी पर चढ़ा दिये गये या निर्वासित कर दिये गये। नागपुर ने 13 जून का दिन चुना था, पर उसी समय मद्रासी पलटन ने आकर चिनगारी दबा दी। हैदराबाद के निजाम ने भी गद्दारी की। निजाम का मंत्री सालारजंग अंग्रेजों का पिट्ठू था, तो निजाम ने खतरा मोल न लिया। वहाँ विद्रोह की आवाज उठी। मस्जिदों में गुप्त बैठकें हुईं। 17 जुलाई को 'दीन-दीन' की आवाजों के साथ निजाम के रोहिला सिपाहियों ने 500 नागरिकों के साथ रेजीडेंसी पर हमला किया। लेकिन सालारजंग की मदद से अंग्रेजों ने विद्रोह को जल्दी ही दबा दिया। पर हैदराबाद के पास ही छोटी-सी रियासत जोरापुर के राजा ने विद्रोहियों का साथ दिया। अरब-रोहिला-पठान सेना, मौलवी और रायचूर व अर्काट के ब्राह्मण विद्रोही सेना में साथ-साथ थे। पर यहाँ भी सालारजंग ने उन्हें गिरफ्तार कर अंग्रेजों को सौंप दिया। राजा को कालेपानी की सजा दी गयी, जहाँ उसने स्वयं को गोली-मार ली। अर्काट के गोपाल दुर्ग पर झंडा फहराते कुछ महिलाएँ भी शहीद हुई थीं, जिनके बारे में आगे लिखा जा रहा है।

● **(क्रमशः)**

www.thearyasamaj.org

भोजन के द्वारा चिकित्सा

आलू (Potato)

– डॉ. गणेश नारायण चौहान

प्रकृति– आलू की शुष्क और गर्म है। यह रोटी से जल्दी पचता है। यह सम्पूर्ण आहार है।

आलू में कैल्शियम, लोहा, विटामिन 'बी' तथा फॉस्फोरस बहुतायत में होता है। आलू खाते रहने से रक्तवाहिनियाँ नाड़ी बड़ी आयु तक लचकदार बनी रहती हैं तथा कठोर नहीं होने पातीं। इसलिए आलू खाकर लम्बी आयु प्राप्त की जा सकती है। होम्योपैथी के डॉ. ई.पी. एन्शूज ने अपनी पुस्तक 'थेराप्यूटिक बाई-वेज' में आलू के विभिन्न उपयोग बताए हैं। कुछ उपयोगी प्रयोग नीचे दिए जा रहे हैं–

बेरी-बेरी– बेरी-बेरी का अर्थ है- चल नहीं सकता। इस रोग से जंघागत नाड़ियों में क्षीणता का लक्षण विशेष रूप से होता है। आलू पीसकर, दबाकर, रस निकालकर एक चम्मच की एक खुराक के हिसाब से नित्य चार बार पिलायें। कच्चे आलू को चबाकर रस को निगलने से भी समान लाभ मिलता है।

विटामिन 'सी'– आलू में विटामिन 'सी' बहुत होता है। इसको मीठे दूध में भी मिलाकर पिला सकते हैं। आलू को छिलके सहित गर्म राख में भूनकर खाना सबसे अधिक गुणकारी है या इसको छिलके सहित पानी में उबालकर खायें। पानी, जिसमें आलू उबाले गए हों, को न फेंकें बल्कि इसी पानी में आलुओं की सब्जी बना लें। इस पानी में मिनरल और मिटामिन अधिक होते हैं।

सौन्दर्यवर्धक– आलू का रस त्वचा को निखारने के लिए उपयोगी है, क्योंकि इसमें पोटेशियम, सल्फर और क्लोरीन की प्रचुर मात्रा होती है। आलू का रस त्वचा पर लगायें, धोयें।

रक्तपित्त (Sourvy)– यह रोग विटामिन 'सी' की कमी से होता है। इस रोग की प्रारम्भिक अवस्था में शरीर और मन की शक्ति क्षीण हो जाती है अर्थात् रोगी का शरीर निर्बल, असमर्थ, मन्द, कृश तथा पीला-सा दिखता है। थोड़े-से परिश्रम से साँस चढ़ जाता है, मनुष्य में सक्रियता के स्थान पर निष्क्रियता आ जाती है। रोग के कुछ प्रकट रूप में होने पर टाँगों की त्वचा पर रोम कूपों (Hair Follicles) के आस-पास आवरण के नीचे से रक्तस्राव होने लगता है, बालों के चारों ओर त्वचा के नीचे छोटे-छोटे लाल चकत्ते (Petchiae) निकलते हैं। फिर धड़ की त्वचा पर भी रोम कूपों के आस-पास ऐसे बड़े-बड़े चकत्ते (Ecchymoses) निकलते हैं। त्वचा देखने में खुश्क, खुरदरी तथा शुष्क लगती है। दूसरे शब्दों में अतिकिरेटिनता (Hyperkeratosis) हो जाता है। मसूढ़े पहले से ही सूजे होते हैं और इनसे सरलता से रक्तस्राव हो जाता है। बाद में रोग बढ़ने पर टाँगों की माँसपेशियों विशेषतः प्रसारक (Extensor) पेशियों

www.thearyasamaj.org

से रक्तस्राव होकर उनमें वेदनायुक्त तथा स्पर्शक्षम ग्रन्थियाँ भी बन जाती हैं। हृदय-माँस में भी स्राव होकर हृदय-शूल का रोग हो सकता है। नासिका आदि से खुला रक्तस्राव भी हो सकता है। अस्थिक्षय (Caries) और पूयस्राव (Pyorrhoea) भी बहुधा इस विटामिन की कमी से प्रतीत होता है। कच्चा आलू रक्तपित्त को दूर करता है।

नीला पड़ना— कभी-कभी चोट लगने पर नीला पड़ जाता है। नील पड़ी जगह पर कच्चा आलू पीसकर लगायें।

जलना— (1) जले हुए स्थान पर कच्चा आलू पीसकर लगायें। (2) तेज धूप, लू से त्वचा झुलस गई हो तो कच्चे आलू का रस झुलसी त्वचा पर लगाने से सौन्दर्य में निखार आता है।

हृद्दाह— इसमें आलू का रस पियें। यदि रस निकाला जाना कठिन हो तो कच्चे आलू को मुँह में चबाएँ तथा रस पी जायें और गूदे को थूक दें। इससे हृद्दाह में आराम मिलता है। हृद्दाह में रोगी को हृदय में जलन प्रतीत होती है। इसका रस पीने से तुरन्त ठण्डक प्रतीत होती है।

अम्लता (Acidity)— जिन बीमारों के पाचनांगों में अम्लता (खट्टापन) की अधिकता है, खट्टी डकारें आती हैं और वायु अधिक बनती है, उनके लिए गर्म-गर्म राख या रेत में भुना हुआ आलू बहुत लाभदायक है। भुना हुआ आलू गेहूँ की रोटी से आधी देर में पच जाता है और शरीर को गेहूँ की रोटी से भी अधिक पौष्टिक पदार्थ पहुँचाता है। पुरानी कब्ज और अँतड़ियों की सड़ाँध दूर करता है। आलू में पोटेशियम साल्ट होता है जो अम्लपित्त को रोकता है। आलू की प्रकृति क्षारीय है जो अम्लता को कम करती है। अम्लता के रोगी भोजन में नियमित आलू खाकर अम्लता को दूर कर सकते हैं।

वातरक्त (Gout)— वातरक्त होने पर कच्चा आलू पीसकर अँगूठे पर लगाने से दर्द कम होता है। दर्द वाले स्थान पर भी लेप करें।

गठिया— चार आलू सेंककर छिलके उतारकर नमक-मिर्च डालकर नित्य खायें। इससे गठिया ठीक हो जाती है।

आमवात (Rheumatism)— पजामे या पतलून की दोनों जेबों में लगातार एक छोटा आलू खें तो यह आमवात से रक्षा करता है। आलू खाने से भी बहुत लाभ होता है।

कटिवेदना— कच्चे आलू की पुल्टिस कमर में लगायें।

घुटना— घुटने के श्लेषकला-शोथ (Synovitis) सूजन व जोड़ में किसी प्रकार की बीमारी हो तो कच्चे आलू को पीसकर लगाने से बहुत लाभ मिलता है।

विसर्प (Erysipelas)— यह एक ऐसा संक्रामक चर्म रोग है जिसमें सूजनयुक्त छोटी-छोटी फुंसियाँ हो जाती हैं, त्वचा लाल दिखाई देती है तथा साथ में ज्वर रहता है। पुरानी फुंसियाँ ठीक होती जाती हैं साथ ही साथ दूसरी जल्दी फैल जाती हैं। इस रोग

www.thearyasamaj.org

पर आलू को पीसकर लगाने से लाभ होता है।

गुर्दे की पथरी– एक या दोनों गुर्दों में पथरी होने पर केवल आलू खाते रहने से बहुत लाभ होता है। पथरी के रोगी को केवल आलू खिलाकर और बार-बार अधिक पानी पिलाते रहने से गुर्दे की पथरी और रेत आसानी से निकल जाती है। आलू में मैग्नीशियम पाया जाता है जो पथरी को निकालता है तथा बनने से रोकता है।

गुर्दे या वृक्क– के रोगी भोजन में आलू खायें। आलू में पोटेशियम की मात्रा बहुत पाई जाती है और सोडियम की मात्रा कम। पोटेशियम की अधिक मात्रा गुर्दों से अधिक नमक की मात्रा निकाल देती है, इससे गुर्दे के रोगी को लाभ होता है।

आलू खाने से पेट भर जाता है और भूख में संतुष्टि अनुभव होती है। आलू में वसा (चर्बी) या चिकनाई नहीं पाई जाती है। यह शक्ति देने वाला है, जल्दी पचता है। इसलिए इसे अनाज के स्थान पर खा सकते हैं।

मोटापा– आलू मोटापा नहीं बढ़ाता। आलू को तलकर तीखे मसाले, घी आदि लगाकर खाने से जो चिकनाई पेट में जाती है, वह चिकनाई मोटापा बढ़ाती है। आलू को उबालकर या गर्म रेत या राख में भूनकर खाना लाभप्रद और निरापद है।

उच्च रक्तचाप– उच्च रक्तचाप के रोगी भी आलू खायें तो रक्तचाप सामान्य बना रहता है। पानी में नमक डालकर आलू उबालें। छिलका होने पर आलू में नमक कम पहुँचता है और आलू नमकयुक्त भोजन बन जाता है। इस प्रकार यह उच्च रक्तचाप में लाभ करता है। आलू में मैग्नीशियम पाया जाता है जो उच्च रक्तचाप को कम करता है।

गोरा रंग– आलू को पीसकर त्वचा पर मलें। रंग गोरा हो जायेगा।

सूजन– कच्चे आलू सब्जी की तरह काट लें। जितना वजन आलुओं का हो, उसके डेढ़ गुने पानी में उसे उबालें। जब केवल एक गुना पानी रह जाए तो उस पानी से चोट आई सूजन वाले अंगों को धोएँ, सेंक करें, लाभ होगा।

आँखों में जाला एवं फूला– कच्चा आलू पत्थर पर घिसकर सुबह-शाम काजल की तरह लगाने से 5-6 वर्ष पुराना जाला और 4 वर्ष तक का फूला 3 माह में साफ हो जाता है।

बच्चों का पौष्टिक भोजन– आलू का रस दूध पीते बच्चों और बड़े बच्चों को पिलाने से वे मोटे-ताजे हो जाते हैं। आलू के रस में मधु मिलाकर भी पिला सकते हैं। आलू का रस निकालने की विधि यह है कि आलुओं को ताजे पानी में अच्छी तरह धोकर छिलके सहित कद्दूकस करके इस लुगदी को कपड़े में दबाकर रस निकाल लें। इस रस को एक घण्टे तक ढककर रख दें। जब सारा कचरा-गूदा नीचे जम जाए तो ऊपर का निथरा रस अलग करके काम में लें।

प्रोटीन– (1) सूखे आलू में 8.5 प्रोटीन होता है जबकि सूखे चावलों में 6.7 प्रोटीन होता है। इस

www.thearyasamaj.org

प्रकार आलू में अधिक प्रोटीन पाया जाता है।(2) आलुओं में मुर्गी के चूजों जैसा प्रोटीन होता है। बड़ी आयु वालों के लिए प्रोटीन आवश्यक है। आलुओं का प्रोटीन बूढ़ों के लिए बहुत ही शक्ति देने वाला और बुढ़ापे की कमजोरी दूर करने वाला होता है।

त्वचा की झुर्रियाँ– सर्दी में ठण्डी-सूखी हवाओं से हाथों की त्वचा पर झुर्रियाँ पड़ने पर कच्चे आलू को पीसकर हाथों पर मलें। इससे झुर्रियाँ ठीक हो जायेंगी। नींबू का रस भी समान लाभदायक है। कच्चे आलू का रस पीने से दाद, फुंसियाँ, गैस, स्नायविक और माँसपेशियों के रोग दूर हो जाते हैं।

मुँहासे– आलू उबालकर, छीलकर इसके छिलकों को चेहरे पर रगड़ें। इससे मुँहासे ठीक हो जाते हैं।

दाद, खुजली– दाद, खुजली होने पर कच्चे आलू का रस लगायें या कच्चे आलू की चटनी पीसकर लेप करें। कच्चे आलू का रस चौथाई कप में इतना ही पानी मिलाकर नित्य दो बार पीने से लाभ होता है।

●

'**भोजन के द्वारा चिकित्सा**' पुस्तक से साभार

7-ड-19, जवाहर नगर, जयपुर- 302004
फोन नं.–(0141)2651352

प्रवेश-सूचना

पाणिनि कन्या महाविद्यालय में 25 जून से 30 जून तक कक्षा- 4, 5 एवं 6 उत्तीर्ण 9 वर्ष से 11 वर्ष तक की कन्याओं का प्रवेश होगा।

जो सज्जन अपनी कन्याओं का विद्यालय में प्रवेश कराना चाहते हैं वे 5 जून से 20 जून तक होने वाले **वैदिक संस्कार-संस्कृत प्रशिक्षण शिविर** में अवश्य भाग लें।

वैदिक संस्कार-संस्कृत प्रशिक्षण शिविर

5 जून से 20 जून तक **पाणिनि कन्या महाविद्यालय** में सभी आयु वर्ग के नर-नारियों के लिये **वैदिक संस्कार-संस्कृत प्रशिक्षण शिविर** का आयोजन किया गया है। जो भी इच्छुक नर-नारी हैं वे 31 मई तक अपना रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं।

रजिस्ट्रेशन शुल्क :–500/– आवास एवं भोजन शुल्क :–1500/–

एतत्सम्बन्धित विशेष जानकारी के लिये सम्पर्क करें– श्री हरिओम् द्विवेदी

डॉ. प्रीति विमर्शिनी मो.- 9235604340

आचार्या नन्दिता शास्त्री E-mail : Paninikm@gmail.com

मो०:– 08924899440, 09044812007

www.thearyasamaj.org

३ मार्च, महर्षि पाणिनि मन्दिरम् उद्घाटन समारोह के कुछ अविस्मणीय पल

www.thearyasamaj.org

४ मार्च, नवम दीक्षान्त समारोह का विहंगम दृश्य